Sample

लाल–किताब कुण्डली

Ramesh Parbhakar

347/7 Red Rose Building

Shiv Mohalla Sangam Market

Ladwa, Kurukshtra- 136132

Contact - 9812560311, 9466960753

Sample DOB: 18:12:1973 ; TOB: 01:45:00AM ; POB: Ballia (up) (INDIA)

ज्योतिष सारिणी

जन्म दिन :	18 दिसम्बर 1973 (मंगलवार)
जन्म समयः	01:45:00
वार :	सोमवार
जन्म स्थान :	Ballia (up) , INDIA
रेखांश :	084:10:00E
अक्षांश :	025:45:00N
समयक्षेत्र :	-05:30:00 hrs
समय संशोधन :	00:00:00 hrs
जी. एम. टी. समयः	20:15:00 hrs
स्थानीय समय संस्कार :	00:06:40 hrs
स्थानीय समयः	01:51:40 hrs
सांपातिक काल :	07:36:55 hrs
सूर्योदयः	06:36:32AM
सूर्यास्त :	05:03:05PM
विक्रम संवत :	**2030**
शक संवत :	**1895**
संक्त्सर :	**प्रमादी**
संवत्सर अधिपति :	**इन्द्राग्नि**

शासक ग्रह जन्म

दिनांक / समय : 18:12:1973 / 01:45:00

शासक ग्रह	लग्न	चन्दगमा
राशिपति	बुध	बुध
नक्षत्र स्वामी	मंगल	चन्द्रमा
उप स्वामी	शनि	शनि
उ.उप स्वामी	बुध	बुध
उ.उ.उप स्वामी	चन्द्रमा	सूर्य
दिवस पति	चन्द्रमा	

वर्तमान शासक ग्रह

दिनांक / समय : 14:01:2021 / 13:45:49

शासक ग्रह	लग्न	चन्द्रमा
राशि स्वामी	शुक्र	शनि
नक्षत्र स्वामी	चन्द्रमा	चन्द्रमा
उप स्वामी	चन्द्रमा	गुरू
उ.उप स्वामी	बुध	शुक्र
उ.उ.उप स्वामी	शुक्र	सूर्य
दिवस पति	गुरू	

लग्न :	कन्या
लग्नाधिपति :	बुध
राशि (चन्द्रमा) :	कन्या
राशिपति :	बुध
नक्षत्र :	हस्ता (2)
नक्षत्रपति :	चन्द्रमा
तिथि :	कृष्ण नवमी
करण :	गरिज
सूर्य सिद्धान्त योग :	सौभाग्य
दशा दिन :	365.25 D
दशा बैलेंस :	चन्द्रमा : ५ व0 ५ मा0 0
वर्तमान दशा :	शनि–शनि–बुध
होरा :	शुक्र
अयनांश :	कृष्णमूर्ति (023:23:49)

शुभाशुभ ज्ञान

मूलांक	: 9
भाग्यांक	: 5
मित्रांक	: 3] 9
शत्रु अंक	: 2] 4
शुभ वर्ष	: 18] 21] 23] 27] 30] 32] 36] 39
शुभ दिन	: बुधवार, शुक्रवार
शुभ ग्रह	: बुध, शुक्र
अशुभ ग्रह	: मंगल, गुरू
मित्र राशि	: मंगल, गुरू
मित्र लग्न	: धनु, मीन, वृष, कर्क
शुभ रत्न	: पन्ना
शुभ उपरत्न	: पन्नी, संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	: हीरा
अनुकूल देवता	: गणेश
शुभ धातु	: कांसा
शुभ रंग	: हरित
दिशा	: उत्तर
समय	: सूर्योदय के 2 घंटे बाद
पदार्थ	: शक्कर, हाथीदांत, कपूरस
अन्न	: मूंग (साबुत)
द्रव्य	: घी

While all precautions have been taken for the accuracy of the astrological calculations, the maker of these horoscopes makes no warranties, either expressed or implied.

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

ग्रह स्थिति – कृष्णमूर्ति पद्धति

ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र – चरन	न0 पति	राशि प0	उप	उपउप	उउउ स्0	विशेष
लग्न	कन्या	28:21:17	चित्रा(2)	मंगल	बुध	शनि	बुध	चन्द्रमा	...
सूर्य	धनु	02:21:37	मूला(1)	केतु	गुरू	शुक्र	शनि	शुक्र	मित्र राशि
चन्द्रमा	कन्या	16:06:45	हस्ता(2)	चन्द्रमा	बुध	शनि	बुध	सूर्य	स्व नक्षत्र
मंगल	मेष	04:48:06	अश्विनी(2)	केतु	मंगल	मंगल	मंगल	बुध	स्व राशि
बुध	वृश्चिक	19:57:12	ज्येष्ठा(1)	बुध	मंगल	शुक्र	चन्द्रमा	केतु	स्व नक्षत्र
गुरू	मकर	18:02:27	श्रवण(3)	चन्द्रमा	शनि	बुध	बुध	शनि	नीच राशि
शुक्र	मकर	13:06:04	श्रवण(1)	चन्द्रमा	शनि	राहु	केतु	मंगल	मित्र राशि
शनि व	मिथुन	08:18:21	अरिद्रा(1)	राहु	बुध	राहु	सूर्य	राहु	मित्र राशि
राहु व	धनु	05:16:23	मूला(2)	केतु	गुरू	मंगल	बुध	शनि	सम राशि
केतु व	मिथुन	05:16:23	मृगशिर(4)	मंगल	बुध	सूर्य	शनि	चन्द्रमा	सम राशि
हर्षल	तुला	03:26:47	चित्रा(4)	मंगल	शुक्र	शुक्र	मंगल	सूर्य	सम राशि
नेपच्यून	वृश्चिक	14:26:28	अनुराधा(4)	शनि	मंगल	राहु	शुक्र	बुध	सम राशि
प्लूटो	कन्या	13:17:02	हस्ता(1)	चन्द्रमा	बुध	राहु	शुक्र	मंगल	सम राशि
फरच्यूना	कर्क	12:06:25	पुष्य(3)	राहु	चन्द्रमा	चन्द्रमा	सूर्य	सूर्य	....

लग्न कुण्डली

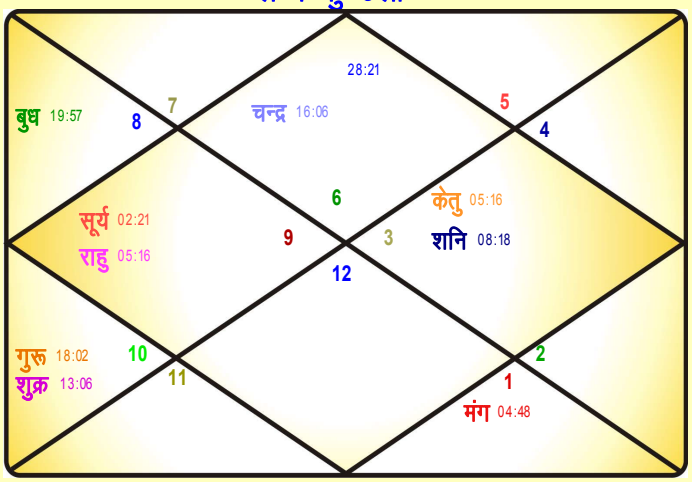

कस्प कुण्डली

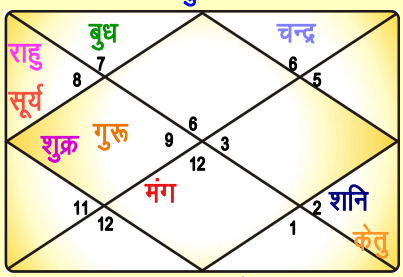

नवांश कुण्डली

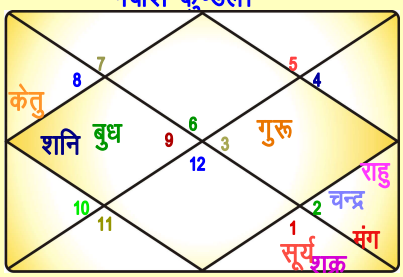

भाव स्थिति – कृष्णमूर्ति पद्धति

भाव	राशि	डिग्री	नक्षत्र – चरन	न0 पति	राशि प0	उप	उपउप	उउउ स्0
I	कन्या	28:21:17	चित्रा(2)	मंगल	बुध	शनि	बुध	चन्द्रमा
II	तुला	27:17:04	विशाखा(3)	गुरू	शुक्र	शुक्र	मंगल	शनि
III	वृश्चिक	27:39:22	ज्येष्ठा(4)	बुध	मंगल	गुरू	राहु	राहु
IV	धनु	29:02:15	उत्तराषाढ़(1)	सूर्य	गुरू	मंगल	शुक्र	राहु
V	कुम्भ	00:44:06	धनिष्ठा(3)	मंगल	शनि	बुध	सूर्य	गुरू
VI	मीन	01:05:02	पूर्वाभाद्र(4)	गुरू	गुरू	मंगल	केतु	गुरू
VII	मीन	28:21:17	रेवती(4)	बुध	गुरू	शनि	बुध	चन्द्रमा
VIII	मेष	27:17:04	कृतिका(1)	सूर्य	मंगल	सूर्य	शुक्र	गुरू
IX	वृष	27:39:22	मृगशिर(2)	मंगल	शुक्र	गुरू	राहु	राहु
X	मिथुन	29:02:15	पुनर्वसु(3)	गुरू	बुध	सूर्य	गुरू	बुध
XI	सिहं	00:44:06	मघा(1)	केतु	सूर्य	केतु	बुध	राहु
XII	कन्या	01:05:02	उत्तरफाल्गुनी(2)	सूर्य	बुध	राहु	चन्द्रमा	शुक्र

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

के. पी. कस्प कुण्डली

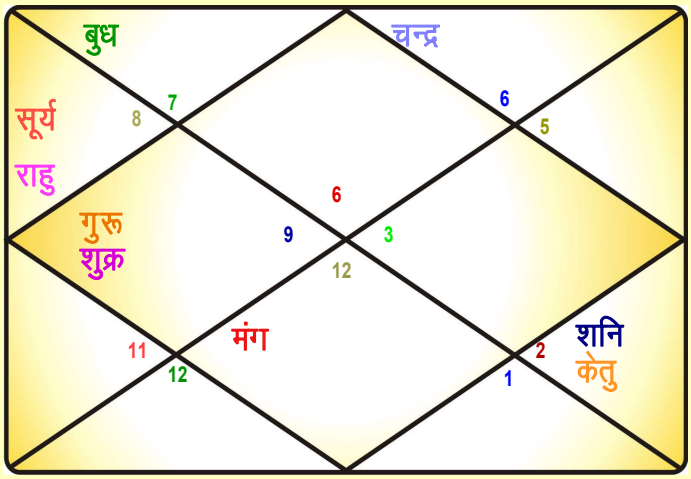

लाल किताब कुण्डली

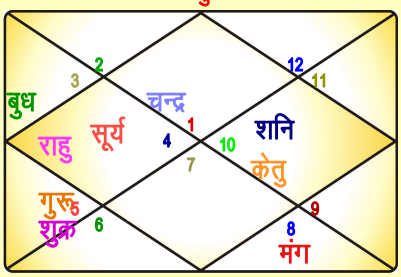

लग्न कुण्डली

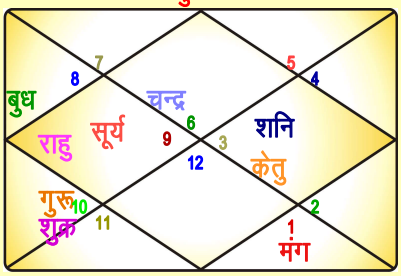

के. पी. कस्प कुण्डली–लाल किताब में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भा0 का ग्रह	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	तृतीय	5	राशि							शुभ भाव में
चन्द्रमा	द्वादश	4	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
मंगल	सप्तम्	1, 8	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
बुध	द्वितीय	3, 6	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
गुरू	चतुर्थ	9, 12	ग्रह						हाँ	शुभ भाव में
शुक्र	चतुर्थ	2, 7	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
शनि	नवम्	10, 11	राशि						हाँ	शुभ भाव में
राहु	तृतीय		ग्रह							शुभ भाव में
केतु	नवम्		ग्रह				हाँ		हाँ	शुभ भाव में

के. पी. कस्प कुण्डली–लाल किताब में भावों (खानों) की स्थिति

खाना न॰	खाना न॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने
१		मंगल	सूर्य	हाँ	सूर्य	शनि	मंगल
२	बुध	शुक्र	गुरू		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	सूर्य, राहु	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४	गुरू, शुक्र	चन्द्रमा	चन्द्रमा		गुरू	मंगल	चन्द्रमा
५		सूर्य	गुरू	हाँ			सूर्य
६		बुध	बुध केतु		बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७	मंगल	शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८		मंगल	मंगल शनि	हाँ		चन्द्रमा	चन्द्रमा
९	शनि, केतु	गुरू	गुरू		केतु	राहु	शनि
१०		शनि	शनि		मंगल	गुरू	शनि
११		शनि	शनि				गुरू
१२	चन्द्रमा	गुरू	गुरू		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

VBVCB CVBVCB VCBVCBCV CVBVCB

के. पी. कस्प कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

लाल किताब की सामान्य दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य							अर्द्ध		अर्द्ध
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु							अर्द्ध		अर्द्ध
केतु									

ग्रहों की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य							0		0
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
गुरू		0							
शुक्र									
शनि	0							0	
राहु			0				0		0
केतु	0							0	

लाल किताब में टक्कर की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा			0						
मंगल				0					
बुध							0		0
गुरू									
शुक्र									
शनि					0	0			
राहु									
केतु					0	0			

लाल किताब में पाये की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल	0							0	
बुध									
गुरू		0							
शुक्र		0							
शनि									
राहु									
केतु									

लाल किताब में विश्वासघात की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य		0							
चन्द्रमा							0		0
मंगल					0	0			
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु		0							
केतु									

लाल किताब में सहचरी दिवार दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य				0					
चन्द्रमा									
मंगल					0	0			
बुध									
गुरू	0							0	
शुक्र	0							0	
शनि									
राहु				0					
केतु									

लाल किताब में अचानक प्रहार दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल							0		0
बुध					0	0			
गुरू				0					
शुक्र				0					
शनि			0						
राहु									
केतु			0						

लाल किताब में परस्पर सहयोग दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य			0						
चन्द्रमा					0	0			
मंगल									
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु			0						
केतु									

ग्रहफल और उपाय–लाल किताब

(सभी भविष्यफल के. पी. कस्प कुण्डली पर आधारित हैं)

चौथे भाव में स्थित गुरू का फल

चौथे भाव में स्थित बृहस्पति को उत्तम फल का माना गया है। लाल किताब के अनुसार, आप अपनेजीवन में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। मानसिक रूप से भी आप सुदृढ़ हो सकते हैं। आपको धन की कोई कमी नहीं होगी और आपको पारिवारिक सुख भी भरपूर मात्रा में प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य और मंगल शुभ स्थिति में हैं। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता न्यायाधीश या कोई बड़े अफसर हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में दसवां भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपना शरीर नंगा नहीं रखना चाहिए, अन्यथा यह आपके धन के लिए शुभ नहीं होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में है। लाल किताब के अनुसार, आपकी शिक्षा 24 वर्ष तकलगातार चलती रहेगी एवं इसका बहुत ही शुभ प्रभाव होगा। आपको लॉटरी इत्यादि से काफी मात्रा में धन प्राप्त हो सकता है। आपको दबे हुए धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और शुक्र चौथे भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको अपना चरित्र बढ़िया रखना होगा, अन्यथा इन दोनों ग्रहों का फल बहुत ही अशुभ हो जायेगा।

चौथे भाव में स्थित गुरू के उपाय और सावधानियाँ

(1) आपको अपने घर में मंदिर का निर्माण नहीं करना चाहिए।
(2) बड़ों की सेवा करनी चाहिए।
(3) साँप को दूध पिलायें।
(4) दूसरों के सामने अपने शरीर को खुला न रखें।
(5) अपने बनियान पर लाल निशान लगाकर के पहनें।
(6) दूसरों के सामने नहीं नहायें।
(7) धार्मिक स्थानों की यात्रा करें और पूजा करें।
(8) कुलपुरोहित का आशीर्वाद लें।
(9) पीपल का पेड़ लगायें।
(10) अपना चरित्र स्वच्छ रखें।
(11) बुजुर्गों की सेवा करें।
(12) घर की दीवार पर पीला पेंट लगायें।

तीसरे भाव में स्थित सूर्य का फल

तीसरे भाव में सूर्य को धन संपत्ति का राजा बोला गया है। सामान्यतः चंद्रमा और शुक्र जब तीसरे भाव में हों, तो शुभ फल ही देते हैं और मंगल भी बद (बुरा) होते हुए भी अशुभ फल नहीं देता है।

तीसरे भाव में बैठा हुआ सूर्य आपमें ज्योतिष के प्रति रूचि पैदा कर सकता है और आप ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त करते हैं, तो यह आपके लिए लाभदायक होगा।

आपको अपना चरित्र ठीक रखना चाहिए, अन्यथा सूर्य आपके भाग्य को नष्ट कर सकता है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके घरमें दिन में चोरी हो सकती है। आपको सावधान और सचेत रहने की जरूरत है।

आपकी कुण्डली में सूर्य का कोई शत्रु ग्रह नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपके पूर्वजों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रही होगी।

आपकी कुण्डली में सूर्य और राहु एक साथ तीसरे भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, यह स्थिति केतु और बुध को आपकी कुण्डली में अशुभ बना रही है। आपकी बहन, बुआ अथवा बेटी परइसका बुरा प्रभाव हो सकता है। हाथी दाँत के जेवर आपके लिए अत्यंत नुकसानदायक होगा।

तीसरे भाव में स्थित सूर्य के उपाय और सावधानियाँ

(1) अपना चाल–चलन ठीक रखें।
(2) अपने भतीजे की सहायता करें।
(3) अपनी माता–दादी का आशीर्वाद लेते रहें।
(4) रविवार का व्रत रखें।
(5) सूर्य को गुड़ डालकर अर्घ्य दें।
(6) हरिवंश पुराण की कथा कहें या सुनें।
(7) दूसरों को खीर खिलायें।
(8) शुभ सोचें।

बारहवें भाव में स्थित चन्द्रमा का फल

लाल किताब के अनुसार, बारहवें भाव में स्थित चंद्रमा के फल को अशुभ बताया गया है। यदि आपअपने घर में वर्षा का जल रखें, तो चंद्रमा का फल शुभ हो सकता है।

आपके लिए पैतृक संपत्ति हानिकारक हो सकती है, परन्तु आपका अपना कमाया हुआ धन कभी भीबर्बाद नहीं होगा। आपको जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आपको रात में नींद नहीं आ सकती है और सिर की चमड़ी पर भी चंद्रमा का बुरा असर हो सकता

है।

आप समाज–सेवा से किसी प्रकार से जुड़े हो सकते हैं। दूसरे लोग आपसे वैचारिक मदद प्राप्त कर सकते हैं। प्रायः स्त्रियां आपके जीवन में दुख का कारण बन सकती है और घर के लोग आपसेअकारण ही ईर्ष्या कर सकते हैं।

बारहवें भाव में स्थित चन्द्रमा के उपाय और सावधानियाँ

(1) शुद्ध चाँदी में मोती (5 रत्ती से बड़ा) सोमवार के दिन पहनना चाहिए।
(2) अपनी माता और सास की सेवा करें।
(3) पानी की घूंट पीकर कोई काम शुरू करें।
(4) वर्षा का जल घर में रखें।
(5) अपनी घर की छत के नीचे हैण्डपम्प या कुआं न रखें।
(6) कानों में सोना पहनें।
(7) साधु–सन्यासियों को खाना न खिलायें।
(8) कोई भी स्कूल, कालेज या पढ़ने–लिखने की संस्था न खोलें।
(9) बहुत ज्यादा न बोलें।
(10) नीम के पेड़ का पानी घर में रखें।
(11) सोमवार का व्रत करें।
(12) घर की छत पर गोल पानी की टंकी न रखें।

चौथे भाव में स्थित शुक्र का फल

आपकी कुण्डली में शुक्र चौथे भाव में स्थित है। आपको बहुत सारी यात्रायें करनी पड़ सकती है, जो कि फलदाई होंगी।

आपकी कुण्डली में शुक्र चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके ननिहाल की हालत ज्यादा ठीक नहीं हो सकती है और आपको अपनी संतान के बारे में काफी चिंता करनी पड़सकती है। यदि आपके ननिहाल पर बुरा असर पड़ रहा है, तो आपको बारिश का पानी चाँदी की डिब्बी में डालकर घर में रखना चाहिए अथवा कुएं में केसर या हल्दी डालना चाहिए।

यदि आप कुएं पर छत डालकर अपना घर बनवाते हैं, तो आपको संतान होने की संभावना बिल्कुलही कम हो सकती है।

आपको अपना चरित्र बहुत ही साफ सुथरा रखना चाहिए, अन्यथाा आपके भाग्य पर इसका बुरा असर होगा।

आपको दूसरों की गलतियों का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। यदि ऐसे व्यक्ति की खूबियों का बखानकरेंगे, तो आपके लिए शुभ

होगा।

यदि आपके मकान की छत की हालत जर्जर है, तो इसका आपके जीवनसाथी पर बुरा असर हो सकता है।

यदि आपका विवाह 22, 24, 29, 32, 39, 47, 51, 60 साल में हो, तो इसका आपके ऊपर बहुत ही बुरा असर पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में शनि और बृहस्पति एक साथ स्थित नहीं हैं। लाल किताब के अनुसार, आपकी पत्नी बहुत अधिक भाग्यशाली नहीं हो सकती हैं।

आपकी कुण्डली में शुक्र और बृहस्पति एक साथ चौथे भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपकी पत्नी और आपकी माता के बीच अनबन हो सकती है।

चौथे भाव में स्थित शुक्र के उपाय और सावधानियाँ

(1) यदि आपकी पत्नी बीमार होती हैं, तो अपने छत पर शहद से भरा हुआ बर्तन रखें।
(2) दही का दान करें।
(3) बृहस्पति का उपाय सहायक होगा।
(4) गाय की सेवा करें।
(5) अपनी पत्नी का नाम बदलकर उसके साथ दुबारा विवाह करें।
(6) बहते हुए पानी में चावल, चाँदी या दूध बहायें।
(7) यदि आपकी पत्नी और आपकी माता में अनबन होती रहती है, तो बुजुर्ग औरतों को खीर और दूध खिलायें।
(8) अपने घर की छत को साफ–सुथरा रखें।
(9) बृहस्पति की वस्तुएं जैसे चना, दाल अथवा केसर नदी में बहायें।
(10) आडु की गुठली में सुरमा भरकर जमीन में दबायें।
(11) कपिला गाय की सेवा करें।
(12) लाल कपड़े पहनें और शहद का सेवन करें।
(13) वस्त्रों पर विशेष ध्यान दें।

सातवें भाव में स्थित मंगल का फल

आपकी कुण्डली में मंगल सातवें भाव में बैठा हुआ है। आपको विष्णु भगवान की सहायता प्राप्त होती रहेगी। आपको अपने भाई के लड़कों को पालना चाहिए। आप ज्योतिष विद्या में भी रूचि रखने वाले हो सकते हैं।

सातवें भाव में मंगल के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए आप जब भी अपनी बुआ या बहन के घर जायें तो मिठाई अवश्य ले जायें। इसके अलावा ठोस चाँदी अपने घर में रखना भी मंगल के

प्रभाव को शुभ कर सकता है।

सातवें भाव में स्थित मंगल के उपाय और सावधानियाँ

(1) बुआ/बहन को लाल कपड़ा भेंट करें।
(2) शनि को उच्च करने के लिए मकान बनायें।
(3) चाँदी की ठोस गोली अपने जेब में रखें।
(4) स्नान करने के बाद अपनी पत्नी के साथ लाल कपड़ा पहनें तथा ताँबे के बर्तन में चावल भरकर उस पर चंदन का लेप लगाकर हनुमान जी के मंदिर में दान करें।
(5) बेटी, बहन, बुआ और साली को मिठाई भेंट में दें।
(6) बार–बार एक छोटी सी दीवार बनाकर उसे गिराते रहें।
(7) अपने भाई के लड़कों की सेवा करें।
(8) घर में बेल–बुटेदार पौधे न लगायें।
(9) अपना चाल–चलन ठीक रखें।
(10) मसूर की दाल, शहद या सिंदूर दान करें या पानी में बहायें।
(11) मेहमानों को खाने के बाद मिठी चीजें खिलायें।
(12) मृगछाला पर सोयें।

दूसरे भाव में स्थित बुध का फल

दूसरे भाव में बैठा हुआ बुध शुक्र को कमजोर कर देता है। लाल किताब में दूसरे भाव में स्थित बुधको बहुत बड़ा संत और ज्यादातर अपनी भलाई करने वाला बताया गया है। कहीं–कहीं पर दूसरेभाव में स्थित बुध को ब्रह्मज्ञानी भी बताया गया है।

आपकी कुण्डली में बुध दूसरे भाव में अकेला बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी स्थितिराजाओं की तरह होगी।

आपकी कुण्डली में छठा अथवा आठवां भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, आप बुद्धिमान होंगेऔर मानसिक रूप से स्वस्थ होंगे।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा आठवें अथवा बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकीपिता की उम्र लंबी होगी।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको झगड़े–फसाद से बचना चाहिए।

आपकी कुण्डली में केतु नौवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसर, आपकी भाषण कला प्रभावशाली होगी।

दूसरे भाव में स्थित बुध के उपाय और सावधानियाँ

(1) नाक छेद करवा के 96 दिन तक उसमें चाँदी पहनें।
(2) कुआंरी साली अथवा कुआंरी कन्याओं की सेवा करने से लाभ प्राप्त होगा।
(3) चंद्रमा और बृहस्पति का उपाय सहायता करेगा।
(4) यदि आपके घर में बिना खोला हुआ सूत या ऊन का गोला पड़ा हुआ है, तो उसे खोल दें।
(5) फिटकरी से दाँत साफ करना भी लाभदायक होगा।
(6) आपको तोता, भेड़ तथा बकरी नहीं पालनी चाहिए।
(7) किसी धर्म–स्थान में दूध और चावल का दान देना भी लाभकारी होगा।
(8) हरे रंग का प्रयोग कम से कम करें।

नौवें भाव में स्थित शनि का फल

सामान्यतः नौवें भाव में बैठा हुआ शनि शुभ फल प्रदान करता है। आपको मकान का सुख प्राप्त होगा। आपकी शिक्षा ऊँचे दर्जे की हो सकती है और माता–पिता का सुख लम्बे समय तक प्राप्त होगा। आप पर कोई कर्ज नहीं हो सकता है। यदि आपके मकान के पिछले हिस्से में कोई अंधेरी कोठरी है, तो उसमें रोशनी के लिए खिड़की वगैरह न खुलवायें।

यदि आप अपने घर में ईंधन का सामान या पुरानी लकड़ी इकट्ठा रखते हैं, तो शनि का फल मंदाहो जायेगा।

आपको संतान की प्राप्ति थोड़ी देर से हो सकती है। यदि आपके जीवनसाथी गर्भवती हैं, तो आपको अपना मकान नहीं बनवाना चाहिए।

आपकी कुण्डली में शनि पर राहु या केतु की दृष्टि पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप धन का लेन–देन करते हैं, तो आप निर्धन हो जायेंगे और आपके संतान के जन्म में रूकावटें पैदा हो सकती हैं।

आपकी कुण्डली में शनि और केतु एक साथ नौवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी और आपका जीवन सुखमय होगा।

नौवें भाव में स्थित शनि के उपाय और सावधानियाँ

(1) बहते हुए पानी में चावल या बादाम बहायें।
(2) सोने–चाँदी और कपड़ों से संबंधित कारोबार आपके लिए शुभ फलदायक होगा।
(3) घर के आखिरी में अंधेरी कोठरी जरूर बनवायें।
(4) घर की छत पर ईंधन इक्ट्ठा न करें।
(5) बृहस्पति का उपाय सहायक

होगा।
(6) केसर का तिलक लगायें।
(7) भैरों मंदिर में शराब दान दें।
(8) काली भैसं पालें।
(9) साँप को दूध पिलायें।
(10) तेल/शराब का दान करें।
(11) झूठ न बोलें।
(12) माँस–मदिरा का सेवन न करें।

तीसरे भाव में स्थित राहु का फल

आपकी कुण्डली में राहु तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यहां बैठा हुआ राहु आपके अंगरक्षक की तरह होगा। आपके पास जायदाद अवश्य होगी।

राहु का फल यदि अशुभ हो रहा है, तो चाँदी की डिब्बी में चावल रखकर उसको अपने घर में स्थापित करें।

आपको हाथी दाँत से बनी हुई वस्तुओं को अपने घर में नहीं रखना चाहिए।

आप अपने जीवन में घटने वाली घटनाओं का अनुमान बहुत पहले लगा ले सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बारहवें भाव में मंगल के अलावा कोई दूसरा ग्रह बैठा हुआ है। लाल किताब केअनुसार, इस वजह से बुध और केतु दोनों का फल अशुभ हो सकता है।

तीसरे भाव में स्थित राहु के उपाय और सावधानियाँ

(1) हाथी दाँत से बनी वस्तुएं अपने पास नहीं रखें।
(2) चाँदी के आभूषण पहनें या अपने पास रखें।
(3) कन्यादान करना लाभदायक होगा।
(4) सरसों, तंबाकू आदि का दान करना चाहिए।
(5) अपने परिवार से अलग न रहें।
(6) सूर्योदय के बाद पक्षियों को अनाज डालें।
(7) आपको झूठी गवाही नहीं देनी चाहिए।
(8) पीपल का वृक्ष लगायें।

नौवें भाव में स्थित केतु का फल

लाल किताब में नौवें भाव में स्थित केतु को ''आज्ञाकारी बेटा'' कह कर पुकारा गया है।

आपके जीवन में बहुत सारे बदलाव आ सकते हैं और आपकी संतान वफादार एवं बहादुर होगी। यदि आपके घर में गर्भवती कुतिया है, तो आप पर बहुत शुभ असर हो सकता है।

लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपने नाती, भतीजे, भांजे या साले की उचित देखभाल करते हैं, तो केतु का फल शुभ हो जाता है।

नौवें घर में केतु स्थित होने के कारण आपका आशीर्वाद फलीभूत हो सकता है। निःसंतान दम्पत्ति को आपसे आशीर्वाद लेना चाहिए।

आपको अपने घर में सोने की ईंट रखनी चाहिए या कानों या शरीर पर सोना धारण करना चाहिए। यदि आप घर में सोना रखते हैं, तो यह बढ़ता जायेगा।

केतु से संबंधित बीमारियों जैसे– रीढ़ की हड्डी, पाँव या जोड़ों के दर्द के समय कानों में सोना पहनना चाहिए।

आपको कोई भी कार्य अपने बेटे की सलाह से करनी चाहिए।

नौवें भाव में केतु स्थित होने के कारण आपका जीवन ज्यादातर परदेश मे बीत सकता है। आपके पिता की आर्थिक स्थिति काफी मजबूत होगी। आपके लड़के भी सुखी होंगे।

यदि नौवें भाव में बैठा हुआ केतु मंदी हालत में है, तो ननिहाल पर बहुत ही बुरा असर हो सकता है।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव में कोई न कोई ग्रह बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, उस ग्रह की आम आयु पर असर के साल गुजरने के बाद केतु का फल शुभ हो जायेगा।

आपको कम से कम तीन पुत्र हो सकते हैं।

नौवें भाव में स्थित केतु के उपाय और सावधानियाँ

(1) यदि आपके घर में गर्भवती कुत्तिया है, तो यह आपकी संतान के लिए शुभ फलदायक है।
(2) कानों में सोना पहनें।
(3) घर में किसी स्थान पर सोने का चौकोर पत्तर रखें।
(4) यदि आपके जोड़ों में दर्द होता है, तो कानों में सोना पहनें।
(5) गणेश जी की पूजा करें।
(6) बड़ों का आदर करें।
(7) सास–ससुर की सेवा करें।

ग्रहफल लाल–किताब

(सभी भविष्यफल के. पी. कस्प कुण्डली पर आधारित हैं)

सूर्य तृतीय भाव में

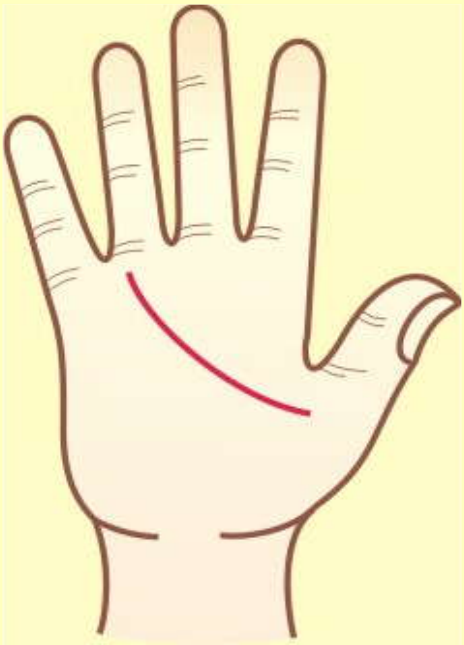

आपकी कुण्डली में सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। आपके कंधों पर अपने परिवार की भारी जिम्मेदारी होगी और आप उसे बहादुरी के साथ निभायेंगे। आप साहसी होंगे और कभी हिम्मत नहीं हारेंगे। आप अपनी क्षमता से अधिक लोगों की मदद करेंगे। आप अपनी बहादुरी का प्रदर्शन करेंगे। आपकेपास जीवन की सभी सुख सुविधायें होंगी। आपकी नजर तेज होगी और आप सक्रिय तथा उत्साह से भरपूर होंगे। आपके भाई और सम्बन्धियों की आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। अपने साले केसाथ आपके संबंध मधुर होंगे और आपको उससे लाभ प्राप्त होगा। आप पेड़ लगायेंगे। आपको युवावस्था में झगड़ों और विवादों से दूर रहना चाहिये। आप अपनी युवावस्था में प्रगति करेंगे। गणित, ज्योतिष में आपकी रूचि होगी। आप सरकारी विभाग से लाभ प्राप्त करेंगे। मुकदमों में आपको जीत हासिल होगी। आपको अपने घर पर बन्दूक, हथियार आदि सावधानी से रखना चाहिये।

यदि आपने अपने परिवार वालों के साथ झगड़ा किया, अपने ससुराल वालों के साथ समस्यायें पैदाकीं, लोगों को गुमराह किया तो आपका सूर्य कमजोर हो सकता है। यदि किसी कारण से आपका सूर्य कमजोर हो जाता है तो आपके घर पर चोरी हो सकती है या आपके परिवार का कोईसदस्य बीमार हो सकता है। आपके शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है। आपको जीवन में

उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। यदि आपके घर का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा की तरफ है तो यह आपके लिये अशुभ हो सकता है। आपको बिना लिखित रूप से किसी प्रकार का आर्थिक लेन–देन नहीं करना चाहिये, अन्यथा आपको अशुभ परिणाम प्राप्त होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– चोरी की कोई वस्तु न लें।
2– कोई गलत काम न करें।

उपाय :

1– अपनी माता और दादी का आर्शीवाद लें।
2– पराई औरतों के साथ अनैतिक संबंध न बनायें।

चन्द्रमा द्वादश भाव में

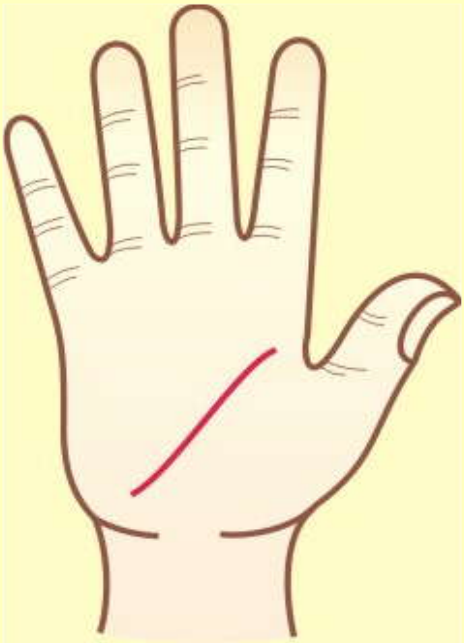

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा बारहवें भाव में स्थित है। आपकी कई इच्छायें पूरी नहीं हो सकती हैं याआपके कई कार्य कई प्रकार की परेशानियों का सामना करने के बाद पूरे हो सकते हैं। आपकी शिक्षा बहुत उत्तम होगी। आप बुद्धिमान होंगे। आप अपने वचन के पक्के नहीं हो सकते हैं या आपमें बार–बार बात बदलने की आदत होगी। आपकी आर्थिक स्थिति बहुत उत्तम नहीं हो सकती है। आपके जीवन में शैक्षणिक ज्ञान का अधिक प्रयोग नहीं हो सकता है। आपका वर्तमान अच्छा होगा। आप स्वप्न देखने वाले होंगे और अपने भविष्य की कल्पना में खोये रहेंगे। लोग आप पर भरोसा करेंगे और अपनी राज की बातें आपको बतायेंगे। आप उनकी राज की बातों को किसी अन्यको नहीं बतायेंगे। आपका आश्वासन लोगों को राहत पहुॅचायेगा। आप अपने पूर्वजों के बारे में बढ़ा–चढ़ा कर बतायेंगे। आप धन की बचत करेंगे। 48 साल की आयु के बाद आप एक बहुत आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगे।

यदि आप नल लगवाते हैं, पानी के संसाधन छत के नीचे रखते हैं, नीम का पेड़ काटते हैं, गलत व्यवहार करते हैं या पूर्वजों का काम खराब करते हैं तो आपका चन्द्रमा कमजोर हो सकता है। यदिआपका चन्द्रमा किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप अपना नुकसान कर सकते हैं। आप अपने अतीत को याद करने में अपना समय बर्बाद कर सकते हैं। आपको सम्पत्ति संबंधी मामलों के कारण मुकदमों का सामना करना पड़ सकता है। उनके निर्णय में देर हो सकती है, परन्तु जीत आपको ही मिलेगी। आपकी संतान निकम्मी हो सकती है। आपकी पैतृक सम्पत्ति का नाश हो सकता है। आप कई परेशानियों का सामना कर सकते हैं। आपको नेत्र रोग हो सकता है।आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। आपको पानी से डर हो सकता है। आपको माता का सुख नहीं मिल सकता है। आपकी अपनी और ससुराल वालों की सम्पत्ति आपके कारण बर्बाद हो सकती है। पराई औरतें आपके जीवन में दुःख का कारण बन सकती हैं। आप आलसी, गरीब और अस्वस्थ हो सकते हैं। आपको खुशियों के बाद परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– छत के नीचे नल आदि न लगवायें।
2– अपने अतीत को याद न करें।

उपाय :

1– नीम के वृक्ष का पानी अपने घर पर रखें।
2– 16 लीटर बारिश के पानी में चार चांदी के टुकड़े रखें।
3– कांच के बर्तन में बर्फ रखें।

मंगल सप्तम भाव में

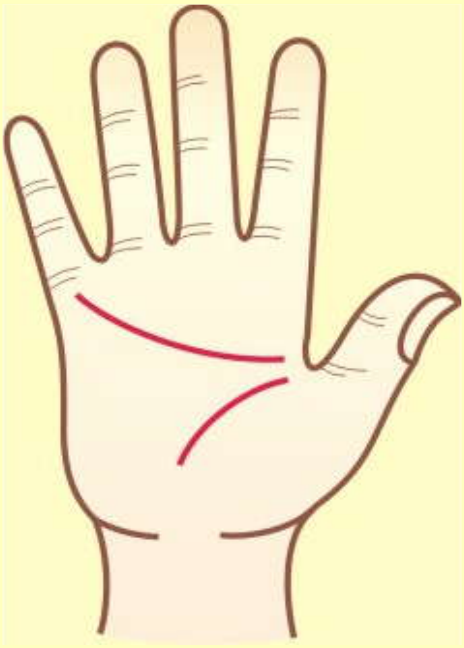

आपकी कुण्डली में मंगल सातवें भाव में स्थित है। आपको सभी प्रकार के सुख प्राप्त होंगे और आपएक राजसी जीवन व्यतीत करेंगे। आपके भाई आपकी मदद करेंगे और आपको उनसे लाभ प्राप्त होगा। आपकी संतान प्रगति करेगी। आपका वैवाहिक जीवन खुशियों से भरा होगा और आपकोजीवनसाथी से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आपके परिवार के सदस्य आपकी मदद करेंगे। आप सज्जन, दयालु और परोपकारी होंगे। आप जरूरतमंदों और दुःखी लोगों की सहायता करेंगे। आप दूसरों को खुशियां प्रदान करेंगे। आप न्यायप्रिय होंगे और आपको नाम और यश प्राप्त होगा। आप न्यायाधीश या सरपंच हो सकते हैं या आपको इस प्रकार के अधिकार मिल सकते हैं, जिसमें आपकोसत्यता का पता लगाकर न्याय करना होगा। आपको ज्योतिषशास्त्र में रूचि होगी। यदि आप सरकार नौकरी में हैं तो आपका स्तर उठेगा। आप जो कुछ चाहेंगे, कम से कम एक बार वह आपको अवश्य मिलेगा। आप अपने परिवार का संरक्षण करेंगे, परिवार के सदस्यों की प्रगति में योगदान देंगे।

यदि आप लोगों से झगड़ा करेंगे, पराई औरतों के साथ अनैतिक संबंध रखेंगे, पुत्री के पिता होंगे तोआपका मंगल कमजोर हो सकता है। यदि आपका मंगल किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तोआपको अपनी विधवा बहन, बुआ या साली के साथ नहीं रहना चाहिये। यदि पराई औरतों के साथ आपके अनैतिक संबंध हुये तो आप दीर्घायु नहीं हो सकते हैं। आपको रक्त संबंधी कोई विकारहो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– अपना आचरण ठीक रखें।
2– जमीन पर रेंग कर बढ़ने वाले पौधे न लगायें।

उपाय :

– बहन और पुत्री को मिठाई दें।
2– भतीजा और भतीजी की सेवा करें।

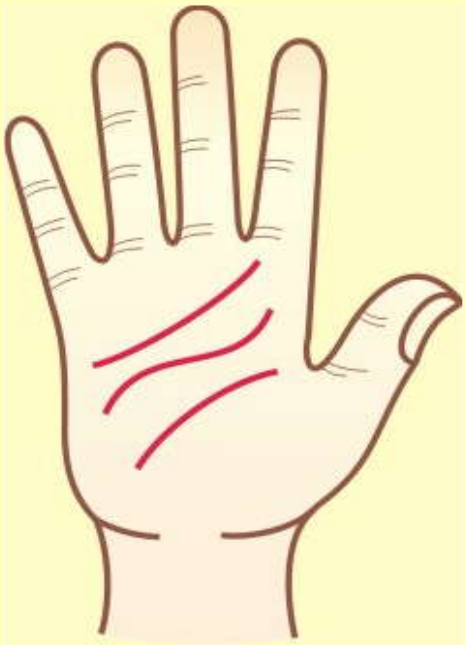

आपकी कुण्डली में बुध दूसरे भाव में स्थित है। आप अपने भाग्य के रचयिता स्वयं होंगे। आप परिश्रमी होंगे और अपनी मेहनत से धन कमाकर धनी होंगे। आपकी कुण्डली में राजयोग है। आप एक राजसी जीवन व्यतीत करेंगे। आप अपने जीवनसाथी से बहुत प्रेम करेंगे और उनका ख्याल

रखेंगे। आपके ससुराल वाले धनी नहीं हो सकते हैं। आपको संगीत में रूचि हो सकती है। आपकामन स्थिर नहीं होगा और आप स्वार्थी होंगे। आपको अपनी पुत्री से अधिक सुख प्राप्त नहीं होगा। आप विद्वान और उपदेशक होंगे। आपको सरकार से लाभ प्राप्त होगा। आपके दादा या पिताबहुत धनी होंगे। आपकी आय का स्रोत उत्तम होगा। आप अपने जन्मस्थान से दूर रहेंगे। आपका दिमाग तीव्र होगा और आप सही व तुरन्त जबाव देने वाले होंगे। जो भी आपसे मिलेगा /मिलेगी, उसे लाभ प्राप्त होगा। आपके परिवार में महिलाओं की संख्या अधिक हो सकती है। आपअपनी संतान के कारण चिन्तित रह सकते हैं। आप एक साधु और राजा की तरह व्यवहार करेंगे।

यदि आप सांसारिक साधुओं से सम्बन्ध रखेंगे, जुआ खेलेंगे या लॉटरी सट्टे आदि में धन निवेश करेंगे तो आपका बुध कमजोर हो सकता है। यदि आपका बुध किसी कारणवश कमजोर हो जाता हैतो आपके पिता का सुख कम हो सकता है। आप पर कलंक लग सकता है या आप बदनाम हो सकते है। यदि आप मांसाहारी भोजन करेंगे तो आपको अधिक यात्रा करनी पड़ सकती है। आपकीयात्रायें लाभप्रद नहीं हो सकती हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– तोता, भेड़ और बकरी न पालें।
2– ताबीज, धागे, जल और विभूति से दूर रहें।

उपाय :

1– धार्मिक स्थान पर दूध और चावल दान करें।
2– फिटकरी से दॉत साफ करें।

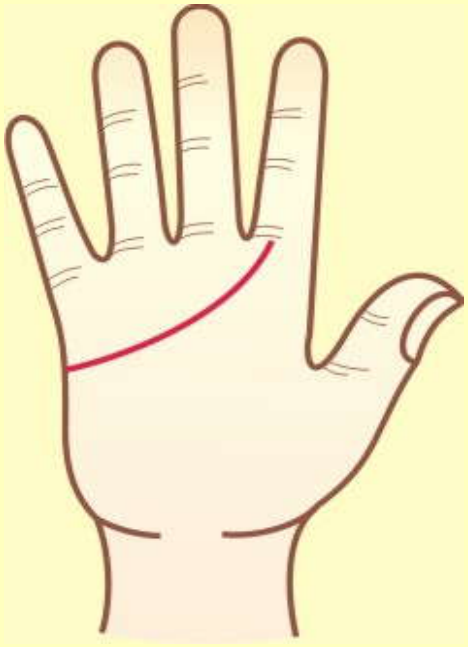

आपकी कुण्डली में बृहस्पति चौथे भाव में स्थित है। आप वकील या जज हो सकते हैं या एक उच्च पद प्राप्त करेंगे। आप जो भी सोचेंगे, वह सच हो जायेगा। आप दूसरों की मदद करते समयअपने नुकसान के बारे में नहीं सोचेंगे। आपको अचानक धन मिल सकता है या आपकी लॉटरीलग सकती है। आपको सरकार से लाभ प्राप्त होगा। आपको उत्तम भवन और वाहन का सुख प्राप्त होगा। आपको 24 साल की आयु तक शिक्षा प्राप्त होगी। आप बहुत चतुर और भाग्यशाली होंगे। आप सबकी मदद करेंगे। आपका स्तर अपने पिता के स्तर से अधिक उॅचा होगा।आप आधिकारिक यात्राओं के दौरान शुभ परिणाम प्राप्त करेंगे। आपके माता–पिता दीर्घायु होंगे।आप यश प्राप्त करेंगे। आपको भूमि प्राप्त होगी और आपका घर आलीशान होगा। आप खुश रहेंगे और आपको मानसिक शांति प्राप्त होगी। आप धनी होंगे। आपको जीवनसाथी, संतान और माता–पिता का सुख प्राप्त होगा। आपको गड़ा हुआ खजाना प्राप्त हो सकता है। लोहे, मशीन आदिसे संबंधित कोई व्यवसाय आपके लिये बहुत लाभकारी हो सकता है।

यदि आपके संबंध गरीबों के साथ हुये, आपने घर पर टूटी हुई चीजें या चिपकाये हुये खिलौने रखे,पराई औरतों के साथ संबंध रखे तो आपका बृहस्पति कमजोर हो सकता है। यदि आपका बृहस्पति किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप स्वयं को बर्बाद कर सकते हैं। 23वॉ, 34वॉ,48वॉ और 55वॉ साल आपके जीवन का उत्तम होगा, लेकिन आपकी माता को इन सालों के दौरान परेशानी हो सकती है। आप बदनाम हो सकते हैं या आपका मान दांव पर लग सकता है। आपको किसी बड़ी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। आप सांसारिक बन्धन से छुटकारा पाने के बारे में सोच सकते हैं। आपकी पत्नी को छाती या गर्भाशय से संबंधित कोई रोग हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– टूटे खिलौने घर पर न रखें।
2– संतानहीन लोगों से संबंध न रखें।

उपाय :

1– धार्मिक स्थान पर सिर झुकायें।
2– परिवार के पुजारी की सेवा करें।

शुक्र चतुर्थ भाव में

आपकी कुण्डली में शुक्र चौथे भाव में स्थित है। आप धनी होंगे। आपको संतान का सुख प्राप्त होगा। अपनी पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे और आपका वैवाहिक जीवन आनन्दपूर्ण होगा। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आप चुस्त और सक्रिय होंगे। आप बहुत अधिक यात्रा करेंगे और उनसे लाभ प्राप्त करेंगे। आपकी पत्नी सभी काम खुशी के साथ करेंगी। यदि आप अपने विवाह केबाद अपने घर में कुऑ बनवायेंगे तो आपको लाभ मिलेगा। आपकी 34 साल की आयु के बाद आपकी पत्नी और संतान बुरे प्रभाव से मुक्त हो जायेंगे। आपका आध्यात्म की तरफ झुकाव होगा और आपको आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होगी। आपको राजयोग द्वारा जीवन में सुख प्राप्त होगा। यदि

आप अपने मामा और मौसी को उनके व्यापार में मदद करेंगे तो उन्हें व्यापार में सफलता प्राप्त होगी। आपको उत्तम भवन और वाहन का सुख प्राप्त होगा। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम होगाऔर वह आपको जीवन में लम्बे समय तक सुख प्रदान करेंगी। आप अपने गॉव, शहर, देश याविदेश में प्रसिद्ध होंगे। आपको यात्रा, उत्तम भोजन और निंद्रा पसन्द होगी। आपको सरकारी विभाग से लाभ प्राप्त होंगे। आप अपने व्यवसाय में उच्च पद प्राप्त करेंगे।

यदि आपने 21 से 25 साल की आयु के मध्य विवाह किया, नशीले पदार्थों का सेवन किया, सूरमा से संबंधित कोई काम किया तो आपका शुक्र कमजोर हो सकता है। यदि आपका शुक्र किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपकी माता और पत्नी के बीच झगड़ा हो सकता है। आपका कोई प्रेम प्रसंग आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। आपकी पत्नी आपके परिवार के लिये शुभनहीं हो सकती हैं। नशे की लत आपके जीवन को बर्बाद कर सकती है। आप दोबारा विवाह कर सकते हैं। आपकी पत्नी को गर्भाशय से संबंधित कोई रोग हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– अपना चरित्र ठीक रखें।
2– अपने पूर्वजों के घर की दहलीज खराब न होने दें।

उपाय :

1– कुँऐं में केसर डाले।
2– चार गुलर के बीजों में सुरमा भरकर किसी वीराने में दबायें।

आपकी कुण्डली में शनि नौवें भाव में स्थित है। आप परोपकारी होंगे और लोगों की मदद करेंगे। इस कारण से आपको लाभ प्राप्त होंगे। आपके पास बहुत सम्पत्ति होगी। आपका संबंध कुलीन और बड़े परिवार से होगा। आप अपने भाई और मित्रों की मदद से धनी बनेंगे। आप बहुत धन कमायेंगे। चलते फिरते काम आपके लिये लाभकारी होंगे। आपको संतान सुख प्राप्त होगा, लेकिन आपको संतान प्राप्ति देर से हो सकती है। आपकी पत्नी धनी परिवार से होंगी। वे भाग्यशाली भी होंगी। आप अपने धन की परवाह नहीं कर सकते हैं। आप दयालु होंगे और हमेशा खुश रहेंगे। आपपर कर्ज का बोझ कभी नहीं होगा। आपको माता–पिता का सुख प्राप्त होगा। आप विद्वान होंगे।आप अपने माता–पिता से अधिक भाग्यशाली होंगे। तीर्थयात्रा से आपको शुभ परिणाम प्राप्त होंगेऔर आपका भाग्य चमकेगा। आप धार्मिक होंगे।

यदि आप दूसरों का धन हड़पने का प्रयास करेंगे, गलत काम करेंगे, अपने नाम पर तीन घर बनायेंगे, लोहे या मशीनरी से संबंधित किसी काम में शामिल होंगे या आपके घर में शीशम का पेड़ हुआ तो आपका शनि कमजोर हो सकता है। यदि आपका शनि किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप दमा या फेफडे के रोग से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको संतान का सुख नहीं मिल सकताहै या आपको पुत्र या पौत्र की प्राप्ति नहीं हो सकती है। आपको साहूकारी के व्यापार में हानिहो सकती है। आग के कारण आपको हानि हो सकती है। गलत कामों के कारण आप बदनामहो सकते हैं। आपकी नजर कमजोर हो सकती है। आप अमीरों को लूट कर गरीबों में धन बांट सकते हैं। आपमें प्रतिशोध की भावना उत्पन्न हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– दूसरों का धन न हड़पें।
2– अपने घर की छत पर ईंधन, लकड़ी आदि न रखें।

उपाय :

1– माथे पर केसर का तिलक लगायें।
2– घर के अन्त में अंधेरे कमरे का निर्माण करें।

आपकी कुण्डली में राहु तीसरे भाव में स्थित है। आपका भविष्य सुनहरा होगा और भाग्य आपका साथ देगा। शत्रु आपके सामने आने का साहस नहीं करेंगे। आप अन्तर्ज्ञानी होंगे और आपको भविष्य में होने वाली घटना का दो साल पहले ही पता चल जायेगा। आपकी सभी मनोकामनायें पूर्णहोंगी। आपकी कलम तलवार से अधिक तेज होगी। आप भारी सम्पत्ति के मालिक होंगे और अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे। आपको संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। आपका 22 साल प्रगति से भरा होगा। आप एक राजसी जीवन व्यतीत करेंगे। आपकी धर्म में आस्था कम होगी। आप निडर, साहसी और वीर होंगे। आपको धन और जीवनसाथी का सुख मिलेगा। आपकी संतान भी धनी होगी। आपको समाज में उच्च स्थान प्राप्त

होगा।

यदि आपने अपने पास या घर पर हाथी दांत रखा, हाथियों के 3–3 खिलौने रखे, हाथी से संबंधित कोई व्यापार किया, बहन, पुत्री के धन का उपयोग किया तो आपका राहु कमजोर हो सकता है। यदि आपका राहु किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके परिवार में कोई महिला विधवा होसकती है। आपके भाई को राहु का कम प्रभाव मिल सकता है। आपका भाई धोखे से आपके धनको हड़प सकता है। आप कर्ज के बोझ से दब सकते हैं, लेकिन आप अपनी बुद्धिमता से उससेबाहर निकल आयेंगे। आपको व्यवसाय में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपकीसंतान को 34 साल की आयु तक अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– अपने पास या घर पर हाथी दांत न रखें।
2– हाथियों के 3–3 खिलौने घर पर न रखें।

उपाय :

1– ठोस चांदी घर पर न रखें।
2– कन्याओं की सेवा करें, दुर्गा सप्तसती का पाठ करें।

आपकी कुण्डली में केतु नौवें भाव में स्थित है। आपको पुत्रों के बजाय पुत्रियों से अधिक सुख प्राप्तहोगा। आप अन्तराष्ट्रीय स्तर के खिलाडी बन सकते हैं। आपका धन बढ़ेगा। आप शंकालु स्वभाव के हो सकते है। 40 साल की आयु तक आपको मिले जुले परिणाम प्राप्त होंगे। इसके बादआपका समय बहुत शुभ होगा और आप एक विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। कुल मिलाकर आपका जीवन खुशहाल और सुखी होगा।

यदि आपने अपने भाई के साथ झगड़ा किया या औरतों के साथ संबंध रखे तो आपका केतु कमजोर हो सकता है। यदि आपका केतु किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपका चरित्र खराब हो सकता है। इस कारण से आप या तो नपुंसक हो सकते हैं या आपके कई संताने हो सकती हैं। आपको संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती है या आपको संतान गोद लेनी पड़ सकती है।इस कारण आपको बहुत परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपका भाई आपको बर्बाद कर सकता है या आपका धन हड़प सकता है। अन्य महिलाओं के साथ संबंध आपके वैवाहिक जीवन में कटुता ला सकते हैं। यह आपके लिये घातक हो सकता है। आपके धन का अपव्यय हो सकता है या आपकी अवनति हो सकती है। आपको 48 साल की आयु के आस–पास या अपनी माता की मृत्यु के बाद पुत्र सुख मिल सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1– अपना चरित्र ठीक रखें।
2– कुत्तों से घृणा न करें।

उपाय :

1– अपने घर की नींव में शहद से भरकर चांदी का पात्र रखें।
2– शहद से भरकर चांदी का पात्र घर में रखें।

जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित कारण और उपाय

(सभी भविष्यफल के. पी. कस्प कुण्डली पर आधारित हैं)

शिक्षा से संबंधित भविष्यफल और उपाय –

यदि आप परीक्षा में लाल रंग का पेन जिसका कैप सुनहरा हो, जिसमें किसी भी रंग की स्याही भरीहो, उसका इस्तेमाल करेंगे, तो परीक्षा में अवश्य उतीर्ण होंगे।

जेहि पर कृपा करहि जनु जानी। कबि उर अजिर नचावहि बानी।
मोरि सुधारिहि सो सब भांती। जासु कृपा नहिं कृपा अघाती।

इस चौपाई का 108 बार प्रतिदिन प्रातः काल जप करें।

ऊँ माँनिसाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतोः समाः।
यत् क्रौञ्चमिथुना देकमवधीः काममोहितम्।

इस मंत्र का प्रतिदिन प्रातःकाल जागते ही बिना किसी से बोले तीन बार जप करने से उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है।

जनक सुता जग जननी जानकी।
अजिसय प्रिय करूनानिधान की।
ताके जुग पद कमल मनावउँ।
जासु कृपा निर्मल मति पावउँ।

श्री जानकी अथवा श्री सीता राम जी के चित्रपट का पूजन करके इस मंत्र का 108 बार प्रतिदिन जाप करने से उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है।

बुद्धिहीन तनु जानि के, सुमिरौ पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्यादेहु मोहिं हरहु कलेस विकार।।

श्री हनुमान जी की पूजा करके उपयुक्त दोहे का एक माला (108 बार) प्रतिदिन जाप करें। इससे बुद्धि एवं स्मरण शक्ति में वृद्धि होगी।

गुरु गृह गये पढ़न रघुराई।
अल्प काल विद्या सब आई।।

इस चौपाई का प्रतिदिन एक माला (108 बार) जाप करके विद्यालय जाने से निश्चय ही परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी।

लाल किताब के अनुसार, जो बच्चे पढ़ने में कमजोर हैं, उन्हें हरे रंग की तुरमली चाँदी की अंगुठी

या नेकलेस में पहनने से लाभ हो सकता है।

बृहस्पतिवार को पीले कपड़े मे 7 हल्दी की गांठें और बेसन के लड्डू बांधकर नदी में प्रवाहित करनेसे परीक्षा में अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

'ऊँ नमः शिवाय' का जाप करके लाल धागे में दो पाँच मुखी रूद्राक्ष के बीच में एक छेद मुखी रूद्राक्ष को शिवलिंग से स्पर्श कराके धारण करें।

'ऊँ गंग गणपतेः नमः' नामक मंत्र को ग्यारह बार परीक्षा आरम्भ होने से पूर्व जाप करें, परिणाम आपके पक्ष में होगा।

परीक्षा देने जाते समय किसी धार्मिक स्थान में आधा लीटर दूध दान करना उपयोगी साबित हो सकता है।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपकी संतान पढ़ने में कतरा रहा हो, या स्कूल ना जाने के लिए बहाने बनाती हो, या हठ करती हो, तो तांबे का एक चौकोर टुकड़ा सफेद धागे में बांधकर उसके गले में पहनायें।

'श्री कृष्ण प्रसंग' नामक मंत्र को पूष्य नक्षत्र या किसी शुभ दिन को लाल कलम से 17 बार सफेद पन्ने पर लिखकर परीक्षा के दौरान अपने जेब में रखें।

स्वास्थ्य से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में शुक्र चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी स्त्री को ऐसा रोग लग सकता है, जिसका इलाज कठिन होगा। उपाय के तौर पर चाँदी के बर्तन में शहद भर कर उसे तालाब की मिट्टी से ढक दें।

आपकी कुण्डली में मंगल सातवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी पत्नी को गर्भाशय से संबंधित रोग या मासिक धर्म के समय अत्यधिक पीड़ा हो सकती है। उपाय के तौर पर आपको मिट्टी की दीवार को बार–बार बनाकर गिराना चाहिए। ठोस चाँदी अपने घर में रखने से भी आपको लाभ हो सकता है।

आपकी कुण्डली में राहु तीसरे भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपकी वाणी में दोष जैसे– तुतलाना, हकलाना हो सकता है। उपाय के तौर पर हाथी दाँत से बनी हुई वस्तुओं को अपने घर में रखें। धातु या पत्थर से बना हुआ हाथी के जैसा खिलौना अपने घर में बिल्कुल ना रखें।

आपकी कुण्डली में सूर्य और राहु एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको चर्म–रोग

हो सकते हैं। गाय या बकरी का दान करें।यदि आपके घर में कोई ना कोई हमेशा रोग ग्रस्त रह रहा है, बीमारी जाने का नाम नहीं ले रहा है, तो आपके घर में जितनी रोटी बनती है, उसमें चार मीठी रोटी जोड़कर महीने में एक बार अमावस्या या संक्रांति के दिन काले कौए, काली गाय या कुत्ते को खिलाना चाहिए, अथवा महीने में एक बार अन्दर से खोखले कद्दू को किसी धार्मिक स्थलपर दान करना चाहिए, अथवा रात को रोगी के सिरहाने एक, दो या पाँच रूपये का सिक्का रखकर प्रातः काल सफाई कर्मचारी को दान करें, अथवा यदि आप श्मशान से गुजर रहे हैं, तो एकया दो रूपये के सिक्के वहां जरूर फेंके।

धन, ब्यापार और रोजगार से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में शुक्र चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको दूध, नशीली दवाओं इत्यादि से संबंधित वस्तुओं का कारोबार नहीं करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, शनि नौवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको बृहस्पति और चंद्रमा से संबंधित वस्तुओं के कारोबार से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक साथ चौथे भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको शनि से संबंधित वस्तुओं के कार्य करने से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में, शनि नौवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको ठेकेदारी के कार्यों से अधिक लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में, सूर्य राहु, केतु अथवा शनि के साथ स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने जीवन में धन की कमी महसूस होगी।

आपकी कुण्डली में, बुध आठवें, नौवें, ग्यारहवें या बारहवें भाव को छोड़कर अकेले किसी भी भाव मेंबैठा हुआ है और उस पर उसके शत्रु ग्रहों की दृष्टि नहीं पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, आप व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक साथ स्थित हैं। लाल किताब में इसको दिखावे का धनकी संज्ञा दी गई है।

आपकी कुण्डली में, सूर्य तीसरे भाव में एवं इसके शत्रु ग्रह नौवें या ग्यारहवें भाव में स्थित हैं। लालकिताब के अनुसार, आपको परदेश में सोच–समझकर रहना चाहिए, अन्यथा धन हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में, सूर्य तीसरे भाव में और चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता

है।

आपकी कुण्डली में, राहु–सूर्य, राहु–चंद्रमा, केतु–सूर्य या केतु–चंद्रमा एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको नौकरी और आर्थिक मामलों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति चौथे भाव में स्थित है और उस पर राहु, केतु या शनि की दृष्टि नहीं पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, आपको लॉटरी, सट्टा इत्यादि से धन की प्राप्ति होगी।

आपकी कुण्डली में, सूर्य तीसरे भाव में और चंद्रमा छठे, आठवें या बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको धन हानि का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में, सूर्य तीसरे भाव में और उसके शत्रु ग्रह नौवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब केअनुसार, आपको धन की कमी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में, मंगल सातवें भाव में स्थित है। यदि आप परचून या जनरल स्टोर के मालिक हैं, तो आपको लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में, बुध दूसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप रंग, पेन्ट या जनरल स्टोर से संबंधित कार्य में लगे हुए हैं, तो आप लाभ की स्थिति में रहेंगे।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप सोने, चाँदीआदि के आभूषण बनाने का कार्य या तरल पदार्थों से संबंधित कोई कार्य करते हैं, तो आप सफल होंगे।

आपकी कुण्डली में शनि नौवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप लकड़ी से बनेफर्नीचर अथवा अन्य सामानों का व्यापार करते हैं, तो लाभ की स्थिति में रहेंगे।

मकान से संबंधित महत्वपूर्ण योग, सावधानियाँ और उपाय –

आपकी कुण्डली में बृहस्पति चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपने गाय पालरखी है, तो उसके रहने की व्यवस्था घर के पश्चिमी हिस्से में करें।

यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा दक्षिण की तरफ है और मकान से बाहर निकलते समय सीधेहाथ पर रसोई और सामने स्नानघर या पानी का स्थान हो तो आपको कोई ना कोई कष्ट हो सकता है। धन हानि की भी संभावना है।

यदि आपके मकान पर किसी पेड़ की छाया पड़ रही है, तो यह मंगल के शुभ प्रभाव को नष्ट कर देता

है।

यदि आपके मकान की दीवार के पास कटा और सूखा पीपल का पेड़ है, तो आपके परिवार और धन संपत्ति पर इसका बुरा असर पड़ेगा। मंगल का प्रभाव अशुभ हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप बंद कुएं या कुएं पर छत डालकर मकान बनवाते हैं, तो आपको पुत्र सुख में कमी आयेगी।

आपकी कुण्डली में शनि नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, 36 वर्ष की उम्र तक आपके पास तीन मकान होंगे, परन्तु चौथे मकान के बारे में आपको सोचना भी नहीं है, अन्यथा धनहानि, शारीरिक कष्ट और संतान पक्ष कमजोर हो सकता है।

लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपने मकान के अंतिम कोठरी में रोशनी के लिए खिड़की खोलें, तो एक वर्ष के अन्दर आप बर्बाद हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपके पास मकान होगा, परन्तु धन की कमी रहेगी। बृहस्पति या केतु का उपाय करें।

यदि आपका मकान बंद गली के अन्तिम सिरे पर स्थित है, और उसमें हवा सीधे आती है, तो आपके संतान पर इसका बुरा प्रभाव हो सकता है। ऐसे मकान में कभी ना रहें।

यदि आपके मकान पर किसी धार्मिक स्थल आदि की छाया पड़ रही है, तो घर में बीमारियां परेशानकरती रहेंगी।

रसोई घर में खाना बनाने का चुल्हा और बर्तन धोने का स्थान एक ही प्लेटफार्म पर नहीं होना चाहिए, अन्यथा घर में कलह होती रहेगी। उपाय के तौर पर इन दोनों स्थानों के मध्य पंचमुखी हनुमान का चित्र लगायें।

घर के अन्दर यदि लोहे की चारपाई हो, तो पूर्व–दक्षिण दिशा में बिछायें।

घर के मालिक को दक्षिण–पश्चिम के कोने में सोना चाहिए।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है, तो वास्तु शास्त्र के अनुसार, स्त्रियों के लिए हानिकारक होगा। ऐसे मकान में केवल विधुर पुरूष ही सुखपूर्वक रह सकते हैं। यदि आप मुख्य द्वार पर तांबे की कील गाड़े, तो स्थिति सुखद हो सकती है। चाँदी की चौड़ी पत्ती दरवाजा के एककोने से दूसरे कोने तक बिछा सकते हैं। घर पर मिट्टी का बंदर रखें, जिसका मुहं दक्षिण दिशा की ओर हो। बकरी का दान करें। दिन के दो बजे के बाद साबूत मूंग की दाल किसी धार्मिक स्थल पर दान करें।

यदि आपके मकान में कोई मिट्टी वाला स्थान नहीं है, तो यह परिवार की स्त्रियों के लिए हानिकारक हो सकता है और धन सम्पत्ति पर भी बुरा असर हो सकता है। निम्न उपाय करने से स्थिति सुखद हो सकती है। मिट्टी की बनी हुई औरत की मूर्ति घर में रखें। सफेद रूमाल में

कपूर की टिकिया, देशी घी और रूई बांधकर रखें। घर में छोटे–मोटे कार्य करने के लिए नौकरानी रखें।

यदि आपके मकान में धन रखने के लिए तिजोरी, आला या तहखाना बना हुआ है, तो उसे बिल्कुलखाली ना रखें। बादाम अथवा छुआरे रख सकते हैं।

यदि आपके मकान में कोई अंधेरी कोठरी है, तो उसमें रोशनी के लिए रोशनदान ना खोलें।

यदि आपको अपने घर की छत बदलनी है, तो पहले एक अस्थाई छत पुरानी छत के ऊपर बनायें।

लाल किताब के अनुसार, घर के मुख्य द्वार से बाहर निकलते समय सीधे हाथ की तरफ पानी का स्थान और उलटे हाथ की तरफ या पीठ की तरफ रसोई होना उत्तम होता है।

यदि आपके मकान पर पीपल इत्यादि की छाया पड़ रही है, तो यह आपके तरक्की के लिए नुकसानदायक हैं। आपको उस पीपल की जड़ में जल चढ़ाना चाहिए।

यदि आपके मकान के आस–पास कुआं है, तो उसमें भूलकर भी कुड़ा–करकट ना डालें। प्रतिदिन उसमें दूध डालने से आपकी उन्नति होगी।

घर के अन्दर किकर का पेड़ ना लगायें।

मकान या प्लाट का मुख्य द्वार उत्तर–पूर्व या पूर्व दिशा में होना चाहिए।

आपकी चंद्र राशि– वृष, कन्या या मकर है। आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में भी हो, तोआपको कोई हानि नहीं होगी।

लाल किताब के अनुसार, सफेद रंग या पेन्ट का प्रयोग मकान में सभी जगह किया जा सकता है।नीले रंग या पेन्ट का प्रयोग शयन कक्ष या कान्फेंस हाल में करें।

हरे या क्रीम रंग का प्रयोग अध्ययन कक्ष में करें।

गुलाबी या संतरे रंग का प्रयोग भोजनालय में करें। पुलिस या मिलिट्री के स्थान पर लाल रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर है, तो उसमें सफेद रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है, तो उसमें लाल, गुलाबी या संतरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर दिशा में है, तो उसमें हरे या पीले रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार पश्चिम दिशा में है, तो उसमें नीले या हल्के रंग का प्रयोग

करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण–पूर्व दिशा में है, तो मकान में हरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण–पश्चिम दिशा में है, तो मकान में हरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर–पश्चिम दिशा में है, तो आपको अपने मकान में सफेद रंग का प्रयोग करना चाहिए।

आपको अपने मकान का मुख्य द्वार मकान के कम चौड़ाई वाले हिस्से में रखना चाहिए। यदि आपकेमकान का मुख्य द्वार दो पल्लों का है, तो यह आपको अधिक लाभकारी होगा। यदि मुख्य द्वारअन्दर की तरफ खुलता है, तो यह अधिक लाभकारी होगा।

आपको अपने मकान के उत्तर और पूर्व दिशा में दक्षिण और पश्चिम दिशा से अधिक खुला स्थान रखना चाहिए।

आपको अपने मकान की दक्षिण और पश्चिम की दीवार ज्यादा मोटी और ज्यादा ऊँची रखनी चाहिए।

मकान की छत की ढलान उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व में होनी चाहिए।

अपने घर के प्रत्येक कमरे का उत्तर–पूर्व वाला कोना खाली रखें।

मकान में बरामदा और खुली छत उत्तर और पूर्व में होनी चाहिए।

मकान में बालकनी उत्तर और पूर्व में होना चाहिए। बेसमेन्ट उत्तर–पूर्वी भाग में होनी चाहिए।

यदि मकान में पत्थर की मूर्ति लगा रहे हैं, तो उसे दक्षिण–पश्चिम दिशा में लगायें।

मकान के दक्षिण–पश्चिम वाले हिस्से में सम संख्या में वृक्ष लगायें।

मकान में तुलसी जी का पौधा पूर्व, उत्तर या उत्तर–पूर्व में लगायें।

मकान में खिड़कियों की संख्या उत्तर और पूर्व दिशा में अधिक होनी चाहिए। दरवाजे और खिडकियोंकी संख्या सम होनी चाहिए, परन्तु संख्या का अन्त 10, 20 इत्यादि से नहीं होना चाहिए।

मकान में सीढ़ियां दक्षिण, पश्चिम या ईशान कोण को छोड़कर कहीं भी बनाई जा सकती हैं। सीढ़ियों की संख्या विषम होनी चाहिए। सीढ़ियों का घुमाव दक्षिणावर्ती होना चाहिए।

यदि आप अपने मकान में पानी का हौज बनवा रहे हैं, तो उसे उत्तर–पूर्व में बनवायें, यह काफी लाभदायक

होगा।

यदि आप छत पर पानी की टंकी रखवा रहे हैं, तो उसे उत्तर–पश्चिम दिशा में रखवायें। टंकी का रंग काला अथवा नीला हो तो बढ़िया रहेगा।

मकान में पूजा का स्थान ईशान, पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए। भगवान की मूर्ति का मुख उत्तर या पूर्व की ओर रखें। पूजा घर का आकार पिरामिड जैसा रखें। पूजा घर के फर्श का रंग सफेद या हल्का पीला होना चाहिए। पूजा घर के दीवारों का रंग क्रीम, सफेद या हल्का नीला रखें।

मकान में रसोई घर दक्षिण–पूर्व दिशा में होना चाहिए। खाना बनाते समय अपना मुख पूर्व की ओर रखें। रसोई घर की खिड़कियां पूर्व और दक्षिण दिशा में होनी चाहिए।

मकान में भोजनकक्ष पश्चिम दिशा में रखें। खाने की मेज आयताकार या वर्गाकार होनी चाहिए।

मकान में स्नानागार पूर्व, उत्तर या उत्तर–पश्चिम भाग में रखें।

मकान का शौचालय दक्षिण दिशा में होना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, शनि नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपकी पत्नी गर्भवती हैं, तो उस समय मकान का निर्माण आरम्भ ना करें, और एक से अधिक मकान ना बनवायें।

विवाह, स्त्री और गृहस्थ–सुख से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में, शुक्र चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने जीवनसाथी का नाम बदलकर दोबारा विवाह करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, सूर्य शुभ भावों में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी स्त्री सुन्दर, सुघड़ और शिक्षित होगी।

आपकी कुण्डली में राहु पहले, तीसरे, सातवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपका अपनी पत्नी के साथ मनमुटाव रहेगा। उपाय के तौर पर कन्या के पिता को चाहिए कि कन्यादान के समय अपनी पुत्री को चाँदी की ईंट भेंट करें और कन्या उसे अपने पास हमेशा रखें।

आपकी कुण्डली में शुक्र चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, 22, 24, 29, 32, 39 या45वें वर्ष में विवाह हरगिज ना करें, अन्यथा आपको एक से अधिक विवाह करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में शुक्र तीसरे, चौथे, पाँचवें, छठे, नौवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब

के अनुसार, आपकी उम्र लंबी होगी।

आपकी कुण्डली में शुक्र चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको दूसरी स्त्रियों से संबंध नहीं रखना चाहिए, अन्यथा आपको कष्ट हो सकता है।

आपकी कुण्डली में सूर्य–शुक्र, बृहस्पति–शुक्र, मंगल–चंद्रमा या मंगल–शुक्र की युति दूसरे भाव में है। लाल किताब के अनुसार, किसी स्त्री के कारण आपका धन नष्ट हो सकता है।शीघ्र विवाह हेतु– मंगल–पार्वती स्त्रोत का पाठ प्रतिदिन करें।

शीघ्र विवाह हेतु– स्नान के पश्चात कांसे की कटोरी में सरसों का तेल भरकर मुहुर्त देखकर छाया पात्र निकालें।

शीघ्र विवाह हेतु– पीले वस्त्र में चने की दाल बांधकर बृहस्पतिवार के दिन किसी मंदिर में दान करें।

यदि विवाह में अत्यधिक विलम्ब हो रहा है, तो वाल्मिकी रामायण के बाल–काण्ड के सर्ग 73 का 43 दिन तक लगातार पाठ करें।

शीघ्र विवाह हेतु दुर्गा सप्तशती के श्लोकों का पाठ 43 दिन तक लगातार करें।

शीघ्र विवाह हेतु सात सोमवार शिवलिंग पर दूध चढ़ायें।

संतान सुख से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र चौथे भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, पुत्र के जन्म के समय आपकी पत्नी को कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपनी पत्नीका नाम बदलकर पुनः विवाह करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, केतु नौवें भाव में एवं सूर्य या चंद्रमा या मंगल तीसरे भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने संतान के जन्म के समय विशेष सावधानी बरतनी होगी।

आपकी कुण्डली में, शनि और राहु या शनि और केतु नौवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपकी संतान को कष्ट हो सकता है।

आपकी कुण्डली में, शुक्र चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने जीवनसाथी से पुनर्विवाह करना चाहिए, जिससे संतान संबंधित बाधायें खत्म हो

जायेंगी।

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा या बृहस्पति अपने शत्रु ग्रहों के साथ स्थित है। लाल किताब के अनुसार,आपकी माता, दादी या सास की उम्र कम हो सकती है।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति पहले से छठे भाव के बीच स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकेपिता की आयु लम्बी होगी और उनका आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

यदि आप बंद गली के मकान में रहते हैं तो आपको संतान संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़सकता है और नर संतान की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। उपाय के तौर पर आपको बृहस्पतिवार से लगातार 43 दिन तक प्रतिदिन केसर का तिलक लगाना चाहिए।

यदि आप संतान संबंधी समस्या से ग्रस्त हैं, तो आपको अपने घर में हरिवंश पुराण या महाभारत कापाठ करना चाहिए।

यदि आप कुत्ते के नर संतान को अपने घर में रखते हैं, तो आपको संतान अवश्य होगी।

संतान की प्राप्ति के लिए गणेश जी की पूजा करना लाभदायक होता है।

यदि आपको संतान संबंधी कोई समस्या है, तो काले कुत्ते की सेवा करना या उसे अपने घर पर रखकर खाना खिलाना आपके लिए फायदेमंद रहेगा।

यदि किसी स्त्री को संतान हो, परन्तु जीवित ना रहे, तो लाल किताब में ऐसी स्थिति से बचाव के लिए बहुत ही साधारण और सफल उपाय बताया गया है– स्त्री के गर्भवती होने पर उसके बाजु परलाल धागा बांध दें और संतान होने के पश्चात उस धागे को नवजात शिशु के बाजु पर बांध दें और स्त्री को नया लाल धागा पुनः बांधें। स्त्री के बाजु पर 18 महीने तक बंधा रहना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी स्त्री का बार–बार गर्भपात होता है, तो काला धागा उसकी कमर में बांधें और संतान के जन्म के बाद यह धागा संतान के बाजु पर बांधें।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी की संतान जीवित नहीं रहती है, तो संतान के जन्मदिन पर मिठाई की जगह नमकीन खाद्य पदार्थ वितरण करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, प्रसव के समय स्त्री को शारीरिक कष्ट से बचाने और नवजात शिशु के स्वास्थ्य के लिए प्रसव पीड़ा के समय दो पीतल के बर्तन लेकर एक में मीठी वस्तु और दूसरे में दूध भर के स्त्री के हाथ से स्पर्श करवाकर रखना चाहिए, और शिशु के जन्म के बाद से किसी धार्मिक स्थान में दान करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी की नर संतान जीवित न रहती हो, तो उन्हें किसी धार्मिक स्थान में शिशु को जन्म देना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि संतान को कष्ट हो, तो गाय, कौए अथवा कुत्तों को अपने भोजन

का एक हिस्सा दें।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपके घर में एक छत को ढक कर मकान बनाया गया हो, तो संतान होने की संभावना क्षीण होगी।

लाल किताब के अनुसार, आपके घर में कुएं को ढक कर मकान बनाया गया हो, तो संतान होने की संभावना क्षीण होगी।

विदेश यात्रा और भ्रमण से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय –

आपकी कुण्डली में, सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आप राजकीय कार्यों सेसंबंधित अनके यात्रायें करेंगे।

आपकी कुण्डली में, राहु तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके लिए यात्रायें प्रायः हानिकारक होंगी। यात्रा के दौरान आपको सावधान और सचेत रहना पड़ेगा।

लाल किताब में अन्य महत्वपूर्ण फलादेश

(सभी भविष्यफल के. पी. कस्प कुण्डली पर आधारित हैं)

अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी कुण्डली के दसवें भाव में दो आपस में शत्रु ग्रह में बैठ जायें, तो ऐसीकुण्डली को अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) कहते हैं। कुण्डली में दसवां भाव जातक का कर्म स्थान है, इस घर का जातक की कमाई से संबद्ध है, इसलिए ऐसे भाव में दो या दो से अधिक परस्पर शत्रुता वाले ग्रह बैठ जायें तो, जातक के कर्मक्षेत्र में असंतुलन की स्तिथि पैदा हो जाती है। जातक की नौकरी या व्यापार में स्थिरता नहीं आ पाती है। दसवें भाव में बैठे अंधे हो चुके ग्रहों को ठीक करने के लिए दस अंधोंको भोजन कराना चाहिए।

निष्कर्ष– आपकी कुण्डली अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

आधे अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि चौथे भाव में सूर्य और सातवें भाव में शनि स्थित हों तो ऐसी कुण्डली को आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली कहते हैं। इस ग्रह की स्थिति का जातक की मानसिक स्थिति और व्यवसायिकजीवन पर अशुभ असर होगा। जातक की मानसिक शांति में काफी कमी आ सकती है। चौथा भाव हमारे सुख का भी घर है, इस ग्रह स्थिति के कारण गृहस्थ सुख में कमी आने की संभावना होती है।

निष्कर्ष– आपकी कुण्डली आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

धर्मी कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली में राहु या केतु 4थे भाव में या चन्द्रमा के साथ अथवा शनि 11वें भाव में या बृहस्पति के साथ बैठा हुआ है, तो ऐसी कुण्डली को धर्मी कुण्डली (टेवा) कहते हैं। ऐसे जातक के जीवन में कभी भी कोई बड़ी समस्या नही आ सकती है, जो कि जीवन में उथल–पुथल मचा दे। किसी बहुत मुश्किल या कष्ट के समय उसे कहीं न कहीं से दैवीय सहायता प्राप्त हो जाएगी।

निष्कर्ष– यह कुण्डली धर्मी कुण्डली (टेवा) नहीं है।

नाबालिक कुण्डली (टेवा)

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली के पहले, चौथे, सातवें और दसवें भाव (केन्द्र स्थान) में कोई भी ग्रहनहीं बैठा हुआ है या उनमें केवल बुध बैठा हुआ है, तो ऐसी कुण्डली, नाबालिक टेवा (कुण्डली) कहलातीहै। इस स्थिति में जातक की किस्मत बारह साल तक शक के दायरे में होती है।

लाल किताब के अनुसार, नाबालिक टेवा वाले जातक पर बारह वर्षों तक प्रत्येक वर्ष एक–एक ग्रह का प्रभाव अग्रलिखित रूप में पड़ेगा। जीवन पर पड़ने वाले दुषित प्रभाव की अनुकूलता हेतु निम्नांकित भाव स्थित ग्रह का उपाय करना चाहिए।

1– उम्र के पहले साल में सातवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
2– उम्र के दूसरे साल में चौथे भाव के ग्रह का असर पड़ता

है।
3– उम्र के तीसरे साल में नौवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
4– उम्र के चौथे साल में दसवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
5– उम्र के पांचवें साल में ग्यारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
6– उम्र के छठें साल में तीसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
7– उम्र के सातवें साल में दूसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
8– उम्र के आठवें साल में पांचवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
9– उम्र के नौवें साल में छठे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
10– उम्र के दसवें साल में बारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
11– उम्र के ग्यारहवें साल में पहले भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
12– उम्र के बारहवें साल में आठवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।

निष्कर्ष– यह कुण्डली (टेवा) नाबालिक टेवा नहीं है।

लाल किताब में राजयोग

लाल किताब में राजयोग का यह मतलब नहीं है, कि ऐसा जातक कोई बड़ा राजा, प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति ही हो, अपितु राजयोग से कुण्डली में यह संकेत मिलता है, कि जातक के रहन–सहन का स्तर राजाओं की तरह जरूर हो सकता है।

आपकी कुण्डली में राजयोग की कोई भी स्थिति लागू नहीं हो रही है।

लाल किताब में ऋण – लक्षण और उपाय

आपकी कुण्डली में कोई ऋण लागू नहीं हो रहा है।

लाल किताब में वर्जित और अवर्जित उपाय

(1) आपकी कुण्डली में, गुरू उच्च का है, आपको गुरू से संबंधित वस्तुओं का दान नहीं करना चाहिए।

(2) आपकी कुण्डली में, राहु उच्च का है, आपको राहु से संबंधित वस्तुओं का दान नहीं करना चाहिए।

(3) आपकी कुण्डली में, केतु उच्च का है, आपको केतु से संबंधित वस्तुओं का दान नहीं करना चाहिए।

(4) आपकी कुण्डली में चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है, आपको धर्मोपदेश देने वाले साधुओं या फकीरों को अपने घर भोजन नहीं कराना चाहिए, अन्यथा इसका बुरा प्रभाव आपके स्वास्थ्य पर पड़ सकता है।

(5) यदि आपके घर के आखिरी में अंधेरी कोठरी है, जिसमें दरवाजे के अतिरिक्त रोशनी आपने के लिए कोई भी जगह नहीं है, तो उसमें रोशनी के लिए रोशनदान या खिड़की नहीं खोलनी चाहिए, अन्यथा आपकी संतान पर इसका बुरा असर पड़ सकता है।

किसी कारणवश ऐसी कोठरी की छत बदलवानी पड़े तो पुरानी छत को गिराने से पहले उस कोठरी के उपर नई छत डलवा

लें।

(6) यदि आपके घर में सोने–चांदी के गहनों या रूपये–पैसे रखने के लिए सेफ, आलमारी, तिजोरी इत्यादिहै, तो उसे कभी भी पूरी तरह खाली नहीं रखें।

(7) अपने मकान के कुछ हिस्सों में मिट्टी वाला स्थान अवश्य रखें।

(8) दक्षिणमुखी मकान में ना रहें।

(9) झूठ ना बोलें।

(10) झूठी गवाही ना दें।

(11) अपशब्द ना बोलें।

(12) किसी को गाली न दें।

(13) क्रूरता न करें।

(14) ईश्वर पर विश्वास रखें।

(15) देवी–देवताओं की उपासना श्रद्धापूर्वक करें।

(16) मांस–मछली ना खायें।

(17) शराब का सेवन ना करें।

(18) कपड़े सलीके से पहनें।

(19) कान–नाक छिदवायें।

(20) दांत साफ रखें।

(21) संयुक्त परिवार में रहें।

(22) ससुराल से मधुर संबंध बनाकर रखें।

(23) कन्याओं की पूजा करें। उन्हें हरे वस्त्र, उत्तम भोजन आदि देकर प्रसन्न रखें।

(24) बहन–बेटी को मीठी वस्तुओं का उपहार दें।

(25) जिस प्रकार माता की सेवा करते हैं, उसी प्रकार जीवनसाथी का भी उचित देखभाल करें।

(26) भाभी (बड़े भाई की जीवनसाथी) की सेवा

करें।

(27) परिवार के सदस्यों का पालन करें।

(28) मुफत में किसी से कुछ ना लें।

(29) निःसंतान की संपत्ति ना लें।

(30) बड़ों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करें।

(31) यथा संभव दक्षिणमुखी मकान में ना रहें।

(32) घर की छत में छेद ना रखें।

(33) घर में थोड़ी बहुत कच्ची जगह अवश्य रखें।

(34) विकलांगों को भोजन दें, उनकी सहायता करें।

(35) पड़ोस में कोई असहाय विधवा हो, तो उनकी सहायता करें।

(36) मनुष्येत्तर जीवों– गाय, कुत्ता, कौवा, बन्दर आदि को भोजन दें।

(37) काने और गंजे आदमी से सावधान रहें।

(38) नाक को हमेशा साफ रखें।

लाल किताब में एक साथ बैठे ग्रहों का फल

(सभी भविष्यफल के. पी. कस्प कुण्डली पर आधारित हैं)

आपकी कुण्डली में सूर्य और राहु एक साथ तीसरे भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, यह अति अशुभ युति है। आपकी 42 वर्ष की आयु में राहु आपकी संतान को कष्ट पहुंचा सकता है। आपको धन की हानि हो सकती है। आपको सरकारी कार्यों में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप अशुभता को दूर करने के लिए उपाय भी करते हैं, तो राहु का समय पूर्ण होने के बाद ही सूर्य अपना पूर्ण प्रभाव देगा। सूर्य का प्रभाव आपके लिए शुभ होगा। अशुभ प्रभाव मिलने पर आपके विचार कलुषित और द्वेषपूर्ण हो सकते हैं। आपके घर में चोरी हो सकती है या आपको आर्थिक नुकसान हो सकता है, जिससे आपकी स्थिति खराब हो सकती है। ऐसा होने पर आप एक कपड़े में जौ के थोड़े दाने बांधकर घर के अंधेरे हिस्से में किसी वजनदार चीज से दबाकर रख दें। यदि आप अस्वस्थ है या आपको बुखार आता हो, तो आप जौ को गोमूत्र से धोकरनदी में बहा दें। राहु से संबंधित चीजें, जैसे बादाम, नारियल को बहते पानी में प्रवाहित करें। तांबे के सिक्के को रात्रि में आग में तपाकर सुबह बहते पानी में प्रवाहित करें। सिक्का प्रवाहित करने के तुरन्त बाद आपको पुत्र और नजदीकी संबंधियों के सामने नहीं जाना चाहिए– उन पर सूर्य और राहु का अशुभ प्रभाव हो सकता है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और शुक्र एक साथ चौथे भाव में स्थित हैं। यह युति रोगों और कष्टों से आपकी रक्षा करेगी। दोनों ग्रहों का संयुक्त प्रभाव 32 वर्ष की आयु तक रहेगा। विपरीत लिंगी व्यक्तियों से आपको सहायता प्राप्त होगी। आपको पहले बृहस्पति और बाद में शुक्र का शुभ या अशुभ फल मिलेगा। इस युति के अशुभ होने पर आपका विपरीत लिंगी व्यक्तियों की तरफ अधिक झुकाव हो सकता है और आप विलासी हो सकते हैं। आपमें संतान पैदा करने की शक्ति क्षीण हो सकती है। आपको संतान के जन्म से ही दुख प्राप्त हो सकते हैं। संतान होने पर आपका तलाक हो सकता है। एक से अधिक जीवनसाथी होने या कई स्त्रियों से संबंध होने पर आपको बृहस्पति के शुभ परिणाम प्राप्त नहीं होंगे। आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। यदि आप अपना आचरण ठीक रखेंगे, तो अशुभ प्रभाव कम हो जायेगा। आपको अपने जीवनसाथी से दोबारा विवाह करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, शनि और केतु एक साथ नौवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, यह युति शुभ परिणाम प्रदान करती है। इसमें शनि की प्रमुख भूमिका होती है। इस युति के किसी अन्यग्रह से जुड़ने पर तीनों का प्रभाव मंद पड़ जायेगा। आपके भाग्य का निर्णय आपकी 18 वर्ष की आयु के बाद होगा। आपमें संतानोत्पत्ति की क्षमता अधिक होगी। आपको एक रंग का जानवर ही पालना चाहिए। एक से अधिक रंगो का (चितकबरा) जानवर पालने से शनि और केतु अशुभ हो जायेंगे। घोड़ा पालने से कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपका कुटुम्ब बड़ा और बहुत सम्पन्न होगा।

Sample

लाल–किताब वर्षफल

(18:12:2020 - 17:12:2021)

Ramesh Parbhakar

347/7 Red Rose Building

Shiv Mohalla Sangam Market

Ladwa, Kurukshtra- 136132

Contact - 9812560311, 9466960753

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्षफल कुण्डली –48

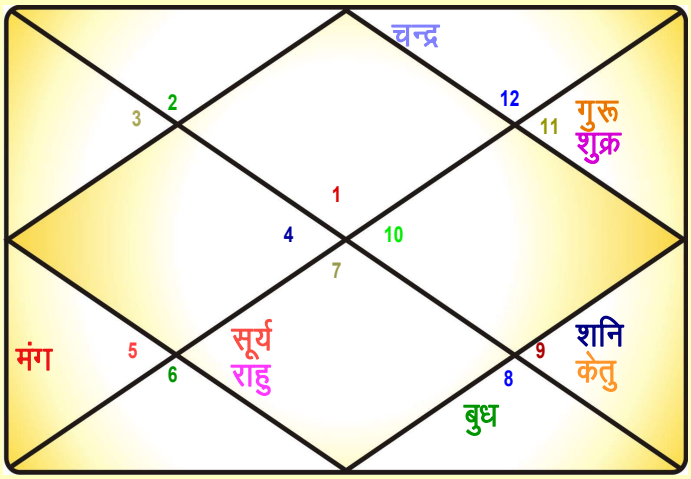

18:12:2020 -- 17:12:2021

लग्न कुण्डली

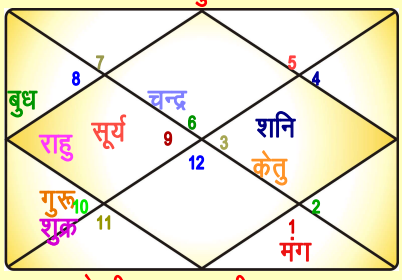

के. पी. कस्प कुण्डली

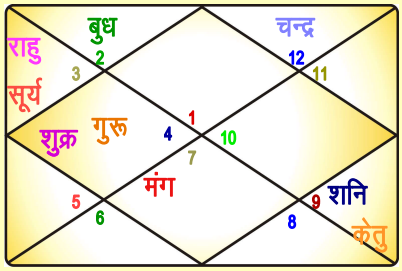

धोखे का ग्रह : शनि केतु राशि नम्बर का ग्रह : शनि

लाल किताब से वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	प्रभाव	पक्का घर	भाग्योदय का ग्रह	साथी ग्रह	कायम ग्रह	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य (बद)	सप्तम्	ग्रह						हाँ	अशुभ भाव में
चन्द्रमा (बद)	द्वादश	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
मंगल (बद)	पंचम्	राशि				हाँ			शुभ भाव में
बुध	अष्टम्	राशि							अशुभ भाव में
गुरू	एकादश	ग्रह	हाँ	हाँ					
शुक्र	एकादश	राशि				हाँ		हाँ	
शनि	नवम्	राशि						हाँ	शुभ भाव में
राहु	सप्तम्	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
केतु	नवम्	ग्रह						हाँ	शुभ भाव में

लाल किताब से वर्षफल में भावों (खानों) की स्थिति

खाना न॰	खाना न॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने
१		मंगल	सूर्य	हाँ	सूर्य	शनि	मंगल
२		शुक्र	गुरू		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३		बुध	मंगल	हाँ	राहु	केतु	बुध
४		चन्द्रमा	चन्द्रमा	हाँ	गुरू	मंगल	चन्द्रमा
५	मंगल	सूर्य	गुरू				सूर्य
६		बुध	बुध केतु	हाँ	बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७	सूर्य, राहु	शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८	बुध	मंगल	मंगल शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
९	शनि, केतु	गुरू	गुरू		केतु	राहु	शनि
१०		शनि	शनि	हाँ	मंगल	गुरू	शनि
११	गुरू, शुक्र	शनि	शनि				गुरू
१२	चन्द्रमा	गुरू	गुरू		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

के. पी. कस्प कुण्डली वर्षफल (48) में ग्रहों की दृष्टि

18:12:2020 -- 17:12:2021

लाल किताब की सामान्य दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल							अर्द्ध		अर्द्ध
बुध		चतुर्थ							
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु									
केतु									

ग्रहों की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
गुरू	0		0					0	
शुक्र			0						
शनि					0	0			
राहु					0	0			
केतु			0						

लाल किताब में टक्कर की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा	0							0	
मंगल		0							
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु									
केतु									

लाल किताब में पाये की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा				0					
मंगल									
बुध									
गुरू	0							0	
शुक्र	0							0	
शनि			0						
राहु									
केतु			0						

लाल किताब में विश्वासघात की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा							0		0
मंगल									
बुध			0						
गुरू				0					
शुक्र				0					
शनि									
राहु									
केतु									

लाल किताब में सहचरी दिवार दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध	0							0	
गुरू		0							
शुक्र		0							
शनि				0					
राहु									
केतु				0					

लाल किताब में अचानक प्रहार दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य			0				0		0
चन्द्रमा									
मंगल	0							0	
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि	0							0	
राहु			0				0		0
केतु	0							0	

लाल किताब में परस्पर सहयोग दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य					0	0			
चन्द्रमा									
मंगल							0		0
बुध		0							
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु					0	0			
केतु									

लाल किताब से वर्षफल

(सभी भविष्यफल के. पी. कस्प कुण्डली पर आधारित हैं)

वर्ष पूर्ण – 48

(18:12:2020 - 17:12:2021)

सातवें भाव में स्थित सूर्य का फल

आपके वर्षफल कुण्डली सूर्य की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में सूर्य की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में सूर्य अशुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में सूर्य अपने शत्रु के पक्के घर में बैठा है।
आपकी कुण्डली में सूर्य अपने शत्रु राहु के साथ बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपनी संतान के लिए चिन्ता लगी रहेगी। आपके घर में अग्निकांड हो सकते हैं। पत्नी का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। व्यर्थ की धन हानि होने से आपकी मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। यदि आप साझेदारी मेंव्यवसाय करते हैं तो आपको घाटा उठाना पड़ सकता है।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) कोई भी कार्य मीठी चीज खाकर और पानी पी कर शुरू करें।
(२) अग्नि में आहुति दें।
(३) नमक कम खायें।
(४) जमीन में तांबे के सात चौकोर टुकड़े दबायें।

बारहवें भाव में स्थित चन्द्रमा का फल

आपके वर्षफल कुण्डली चन्द्रमा की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में चन्द्रमा की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा अशुभ भाव में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लालकिताब के अनुसार, आपको अपने माता-पिता या निकट संबंधियों से बात-बात में झगड़ा हो सकताहै। आपको गलत प्रेम संबंधों से बचने की जरूरत होगी, अन्यथा कोई स्त्री आपको सार्वजनिक रूपसे अपमानित कर सकती है। आर्थिक रूप से भी यह वर्ष आपके लिए ज़्यादा बढ़िया नही हो सकता है।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिएऔर सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) बुरे कार्यों और झुठ बोलने से बचें।
(२) रात्रि के समय दूध का सेवन न करें।
(३) घर में हाथी दांत से बनी हुई वस्तुऐं न ले आयें।

पांचवें भाव में स्थित मंगल का फल

आपके वर्षफल कुण्डली मंगल आपके वर्षफल में की शुभता की मात्रा और अशुभता की मात्रा बराबर है।

आपके वर्षफल में मंगल की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में मंगल कायम है।
आपकी कुण्डली में मंगल शुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में मंगल अपने मित्र के पक्के घर में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में पांचवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके घर में मेहमानों का आगमन ज़्यादा होगा। समाज में आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। परीक्षा या प्रतियोगिता इत्यादि में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। दवाईयों से संबंधित व्यापार से आपको अप्रत्याशित लाभ प्राप्त होगा। आपके शत्रु भी इस वर्ष आपसे मित्रतापूर्ण व्यवहार करेंगे। आपको इस वर्ष बहुत सारी यात्रायें करनी पड़ेंगी, जिससे आपको फायदा ही होगा।

वर्षफल में मंगल का उपाय

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपनी संतान को सोने का गहना न पहनायें।
(२) संतान के जन्मदिन पर मीठे की जगह नमकीन बांटें।
(३) अपने पितरों का श्राद्ध करें।
(४) अपना चाल-चलन ठीक

रखें।
(५) अपने घर पर नीम के वृक्ष लगायें।
(६) मांस, मछली और शराब का सेवन न करें।

आठवें भाव में स्थित बुध का फल

आपके वर्षफल कुण्डली बुध की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में बुध की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में बुध अशुभ भाव में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर आठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके शत्रु आप पर हावी हो सकते हैं। आपका पारिवारिक जीवन भी ज़्यादासुखमय नहीं हो सकता है। इस वर्ष आपको विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध बनाने से बचना चाहिए, अन्यथा आपका पारिवारिक जीवन अशांत हो सकता है।

वर्षफल में बुध का उपाय

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपने घर की छत पर बारिश का पानी रखें।
(२) नितम्ब पर काला सुरमा लगायें।
(३) घर के पुजास्थान को न बदलें।
(४) कुल्हड़ में शहद भरकर विराने में दबायें।
(५) तांबे के बर्तन में हरी मुंग भरकर जल में प्रवाहित करें।

ग्यारहवें भाव में स्थित गुरू का फल

आपके वर्षफल कुण्डली गुरू की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में गुरू की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में गुरू अपने शत्रु बुध के साथ बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको किसी भी प्रकार की सहायता प्राप्त नहीं हो सकती है। आर्थिक और पारिवारिक क्षेत्रों में प्रतिकूल स्थितियों के कारण मानसिक संताप में वृद्धि होगा। अनावश्यक व्यय

की प्रधानता रहेगी और असफल विदेश यात्रा का भी योग है।

वर्षफल में गुरू का उपाय

गुरू के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) पीला रूमाल अपने पास रखें।
(२) श्मशान में माथा टेकें और तांबे का पैसा गिरायें।
(३) अण्डे का सेवन बिल्कुल न करें।
(४) अपने पिता का बिस्तर इत्यादि इस्तेमाल में लायें।
(५) इस वर्ष घर में पूजा स्थान न बनायें।

ग्यारहवें भाव में स्थित शुक्र का फल

आपके वर्षफल कुण्डली शुक्र आपके वर्षफल में की शुभता की मात्रा और अशुभता की मात्रा बराबर है।

आपके वर्षफल में शुक्र की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में शुक्र कायम है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यह वर्ष आपके लिए आर्थिक समृद्धि का वर्ष है। घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। आपके जीवनसाथी का आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप विवाहित हैं और आपकी पत्नी गर्भवती हैं, तो आपको कन्या की प्राप्ति हो सकती है। आपके मन में धार्मिक प्रवृत्तियों का विकास होगा, परन्तु मन में उथल-पुथल रहेगी। आपके ससुराल पक्ष के लोग आपके प्रति सहयोगी रहेंगे। आपकी बहन या साली भी आपका आर्थिक रूप से सहयोग करेगी।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) सरसो के तेल का दान करें।
(२) इस वर्ष अपनी मां या पत्नी को घर की आर्थिक स्थिति संभालने का दायित्व न दें।
(३) अपनी नौकरी/व्यवसाय जल्दी-जल्दी न बदलें।
(४) यदि आपका इस वर्ष विवाह हो रहा है, तो सफेद गाय का दान करें।

नौवें भाव में स्थित शनि का फल

आपके वर्षफल कुण्डली शनि की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में शनि की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में शनि पर उसके शत्रु ग्रह मंगल की अर्द्ध दृटि पड़ रही है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको सट्टे, लॉटरी या अनुमान पर अधारित क्षेत्रों में पैसा नहीं लगाना चाहिए। लोहा, तेल, मशीनरी इत्यादि के व्यापार में आपको घाटा हो सकता है। आपको धार्मिक क्रिया-कलापों में मन लगाना होगा।

वर्षफल में शनि का उपाय

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपने घर की छत पर ईंधन न रखें।
(२) नौ दिन लगातार गंगा में स्नान करें।
(३) दूसरों की अचल संपत्ति पर बुरी नजर न डालें।
(४) माथे पर केसर का तिलक लगायें।

सातवें भाव में स्थित राहु का फल

आपके वर्षफल कुण्डली राहु की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में राहु की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में राहु अशुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में राहु अपने शत्रु के पक्के घर में बैठा है।
आपकी कुण्डली में राहु अपने शत्रु सूर्य के साथ बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकता है और स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण उनका स्वभाव थोड़ा चिड़चिड़ा हो सकता है। यदि आप बिजली विभाग या यातायात विभाग से संबंधित या उनके साथ मिलकर कोई कार्य करने वाले हैं तो आपको घाटाहो सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो अपने साझेदार से आपका विवाद हो सकता है।

वर्षफल में राहु का उपाय

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) सात नारियल बहते पानी में बहायें।
(२) चांदी की ईंट अपने घर में रखें।
(३) वाहन चालक के रूप में कोई कार्य न करें।
(४) प्लास्टिक के डिब्बों में गंगाजल भरकर और उसमें चांदी के चौकोर टुकड़े डालकर अपने पास रखें।

नौवें भाव में स्थित केतु का फल

आपके वर्षफल कुण्डली केतु की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में केतु की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में केतु पर उसके शत्रु ग्रह मंगल की अर्द्ध दृटि पड़ रही है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष की हुई यात्रा ज़्यादा लाभदायक नहीं होगी। यदि आप अपना चाल-चलन ठीक नहीं रखेंगे तो संतान को कष्ट हो सकता है। आपका किसी दूरस्थ स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता हैऔर यदि पदोन्नति की संभावना बन रही है तो किसी कारणवश उसमें बाधा आ सकती है। जायदाद के मामले में भी आपकी चिन्ता बनी रहेगी।

वर्षफल में केतु का उपाय

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) कानों में सोना पहनें।
(२) सोने की ईंट (२१ ग्राम) अपने घर में रखें।
(३) गलत लोगों की संगत में न रहें।
(४) कुत्तों को न सतायें।

वर्षफल में लागू महत्वपूर्ण योग :

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य सातवें भाव में बैठा हुआ है, और पहला भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको शुभ फल प्राप्त

होगा।

आपके वर्षफल कुण्डली में बुध आठवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष बिमारियों पर अधिक धन खर्च होने की संभावना है। उपाय के तौर पर अपने जन्मदिन से ४८ दिन पहले और ४८ दिन बाद तक मिट्टी के बर्तन में गुड़ भरकर विराने में दबायें।

आपके कुण्डली बुध तीसरे, आठवें, नवें, ग्यारहवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनसुसार, बृहस्पति का फल अशुभ हो जायेगा, और सरकारी कार्यों में असफलता प्राप्त होगी।

आपके वर्षफल कुण्डली में बुध तीसरे, आठवें, नवें, या बारहवें भाव में और राहु पहले, पांचवें, सातवें,आठवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं होगी। झगड़े-फसाद की वजह से मुकदमेबाजी भी हो सकती है। उपाय के तौर पर श्मसान का पानी सफेद कांच की बोतल में भरकर अपने घर में रखें।

लाल किताब से वर्षफल

(सभी भविष्यफल के. पी. कस्प कुण्डली पर आधारित हैं)

वर्ष पूर्ण – 48

(18:12:2020 - 17:12:2021)

सूर्य सप्तम भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य ग्रह के अशुभता के कारण –

सूर्य सातवें भाव में स्थित है और बृहस्पति, शुक्र एवं बुध या शनि एवं राहु या शनि एवं केतु ग्यारहवें भाव में स्थित हैं।
सूर्य सातवें भाव में स्थित है और पहला भाव खाली है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपनी संतान के लिए चिन्ता लगी रहेगी। आपके घर में अग्निकांड हो सकते हैं। पत्नी का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। व्यर्थ की धन हानि होने से आपकी मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। यदि आप साझेदारी मेंव्यवसाय करते हैं तो आपको घाटा उठाना पड़ सकता है।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) कोई भी कार्य मीठी चीज खाकर और पानी पी कर शुरू करें।
(२) अग्नि में आहुति दें।
(३) नमक कम खायें।
(४) जमीन में तांबे के सात चौकोर टुकड़े

दबायें।

चन्द्रमा द्वादश भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा ग्रह के अशुभता के कारण –

चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है और सातवें भाव में कोई ग्रह स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लालकिताब के अनुसार, आपको अपने माता-पिता या निकट संबंधियों से बात-बात में झगड़ा हो सकताहै। आपको गलत प्रेम संबंधों से बचने की जरूरत होगी, अन्यथा कोई स्त्री आपको सार्वजनिक रूपसे अपमानित कर सकती है। आर्थिक रूप से भी यह वर्ष आपके लिए ज़्यादा बढ़िया नही हो सकता है।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्नउपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) बुरे कार्यों और झुठ बोलने से बचें।
(२) रात्रि के समय दूध का सेवन न करें।
(३) घर में हाथी दांत से बनी हुई वस्तुऐं न ले आयें।

मंगल पंचम भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल ग्रह अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल ग्रह के अशुभता के कारण –

मंगल पॉचवें भाव में स्थित है और बारहवें भाव में कोई ग्रह स्थित है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर पांचवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपका एक स्थान से दूसरे स्थान पर तबादला हो सकता है। आपको जुआ, सट्टा और लॉटरी आदि व्यसनों से बचकर रहने की आवश्यकता है। आपको अपने खान-पान में सावधानी बरतनी होगी, अन्यथा पेट गड़बड़ हो सकता है। बिना कागजी कारवाई के पैसों का लेन-देन न करें और अनुमान के आधार पर पैसों का निवेश न करें।

वर्षफल में मंगल का उपाय

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपनी संतान को सोने का गहना न पहनायें।
(२) संतान के जन्मदिन पर मीठे की जगह नमकीन बांटें।
(३) अपने पितरों का श्राद्ध करें।
(४) अपना चाल-चलन ठीक रखें।
(५) अपने घर पर नीम के वृक्ष लगायें।
(६) मांस, मछली और शराब का सेवन न करें।

बुध अष्टम भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शुभ स्थिति में आठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार,इस वर्ष आपको आध्यात्मिक और ज़्योतिष संबंधित विषयों में विशेष रूचि हो सकती है।

आपको सारकारी कार्यों में भी सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष आप कड़ी मेहनत से सफलता प्राप्त करेंगे।

वर्षफल में बुध का उपाय

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपने घर की छत पर बारिश का पानी रखें।
(२) नितम्ब पर काला सुरमा लगायें।
(३) घर के पुजास्थान को न बदलें।
(४) कुल्हड़ में शहद भरकर विराने में दबायें।
(५) तांबे के बर्तन में हरी मुंग भरकर जल में प्रवाहित करें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में गुरू ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके शत्रु भी शत्रुता छोड़ कर मित्रता का हाथ बढ़ायेंगे। आप गरीब और जरूरतमंद लोगों की सहायता करेंगे। धार्मिक क्रिया-कलापों में आप बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे। यदि आप विवाहित हैं, तो पुत्र प्राप्ति का भी योग है। आपके पिता और दादा आपकी सहायता करेंगे। आप दूसरों पर अपना प्रभाव डालने में सक्षम होंगे। आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए अत्यंत उत्तम है।

वर्षफल में गुरू का उपाय

गुरू के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) पीला रूमाल अपने पास रखें।
(२) श्मशान में माथा टेकें और तांबे का पैसा

गिरायें।
(३) अण्डे का सेवन बिल्कुल न करें।
(४) अपने पिता का बिस्तर इत्यादि इस्तेमाल में लायें।
(५) इस वर्ष घर में पूजा स्थान न बनायें।

शुक्र एकादश भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यह वर्ष आपके लिए आर्थिक समृद्धि का वर्ष है। घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। आपके जीवनसाथी का आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप विवाहित हैं और आपकी पत्नी गर्भवती हैं, तो आपको कन्या की प्राप्ति हो सकती है। आपके मन में धार्मिक प्रवृत्तियों का विकास होगा, परन्तु मन में उथल-पुथल रहेगी। आपके ससुराल पक्ष के लोग आपके प्रति सहयोगी रहेंगे। आपकी बहन या साली भी आपका आर्थिक रूप से सहयोग करेगी।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) सरसो के तेल का दान करें।
(२) इस वर्ष अपनी मां या पत्नी को घर की आर्थिक स्थिति संभालने का दायित्व न दें।
(३) अपनी नौकरी/व्यवसाय जल्दी-जल्दी न बदलें।
(४) यदि आपका इस वर्ष विवाह हो रहा है, तो सफेद गाय का दान करें।

शनि नवम् भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शुभ स्थिति में होकर नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको सोने-चांदी से संबंधित व्यवसाय में लाभ होगा। इस वर्ष आपके मन में परोपकार की भावना बहुत अधिक रहेगी और धर्म-कर्म के कार्य में आप बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे। आप पर कोई ऋण नहीं होगा और आपके पास धन की कोई कमी नहीं होगी। आपके चल-अचल संपत्ति में वृद्धि होगी और जीवनसाथी के नाम पर शुरू किया हुआ व्यवसाय लाभदायक होगा। आपको अपने पास संख्या में तीन मकान नहीं रखना चाहिए।

वर्षफल में शनि का उपाय

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपने घर की छत पर ईंधन न रखें।
(२) नौ दिन लगातार गंगा में स्नान करें।
(३) दूसरों की अचल संपत्ति पर बुरी नजर न डालें।
(४) माथे पर केसर का तिलक लगायें।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शुभ स्थिति में होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके नौकरी/कारोबार में प्रगति होगी। यदि आप अपने जन्म स्थान से दूर जाकर कोई व्यापार करना चाहते हैं तो यह आपके लिए लाभदायक नहीं होगा। अनुमान के आधार पर पैसे का निवेश न करें। यदि आप विवाहित हैं तो आपको पुत्ररत्न की प्राप्ति हो सकती है। आर्थिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा। साझेदारी में व्यवसाय से आपको लाभ हो सकता है।

वर्षफल में राहु का उपाय

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) सात नारियल बहते पानी में बहायें।
(२) चांदी की ईंट अपने घर में रखें।
(३) वाहन चालक के रूप में कोई कार्य न करें।
(४) प्लास्टिक के डिब्बों में गंगाजल भरकर और उसमें चांदी के चौकोर टुकड़े डालकर अपने पास रखें।

केतु नवम् भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु ग्रह शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शुभ स्थिति में होकर नौवें भाव में बैठा हुआ है। यह वर्ष आपके लिएआर्थिक दृष्टि से शुभ फलदायक है। समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। विदेश प्रवास का भी योग है। किसी भी कार्य में अपनी संतान का सुझाव अवश्य लें। यदि आप दूसरों को आशीर्वाद देते हैं तो फलीभूत होगा।

वर्षफल में केतु का उपाय

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) कानों में सोना पहनें।
(२) सोने की ईट (२१ ग्राम) अपने घर में रखें।
(३) गलत लोगों की संगत में न रहें।
(४) कुत्तों को न सतायें।

वर्षफल में लागू महत्वपूर्ण योग :

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य सातवें भाव में बैठा हुआ है, और पहला भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको शुभ फल प्राप्त होगा।

आपके वर्षफल कुण्डली में बुध आठवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष बिमारियों पर अधिक धन खर्च होने की संभावना है। उपाय के तौर पर अपने जन्मदिन से ४८ दिन पहले और ४८ दिन बाद तक मिट्टी के बर्तन में गुड़ भरकर विराने में दबायें।

आपके कुण्डली बुध तीसरे, आठवें, नवें, ग्यारहवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनसुसार, बृहस्पति का फल अशुभ हो जायेगा, और सरकारी कार्यों में असफलता प्राप्त होगी।

आपके वर्षफल कुण्डली में बुध तीसरे, आठवें, नवें, या बारहवें भाव में और राहु पहले, पांचवें, सातवें,आठवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं होगी। झगड़े-फसाद की वजह से मुकदमेबाजी भी हो सकती है। उपाय के तौर पर श्मसान का पानी सफेद कांच की बोतल में भरकर अपने घर में रखें।

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्ष पूर्ण– 1
(18:12:1973 - 17:12:1974)

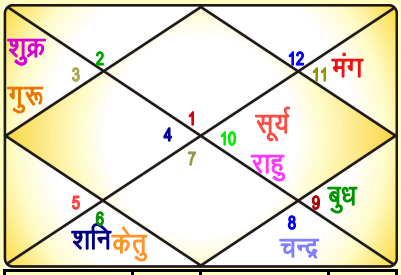

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा-बद	8	शनि	6
मंगल-बद	11	राहु	10
बुध-बद	9	केतु	6
गुरू-बद	3		

वर्ष पूर्ण– 2
(18:12:1974 - 17:12:1975)

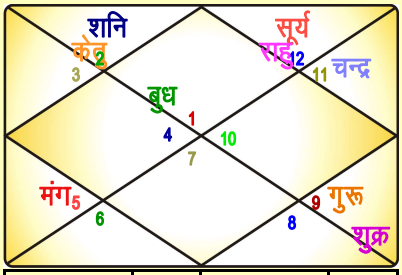

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	12	शुक्र	9
चन्द्रमा	11	शनि-बद	2
मंगल-बद	5	राहु	12
बुध-बद	1	केतु-बद	2
गुरू	9		

वर्ष पूर्ण– 3
(18:12:1975 - 17:12:1976)

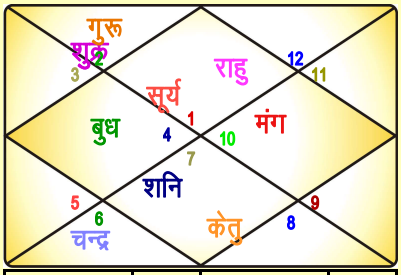

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	1	शुक्र	2
चन्द्रमा-बद	6	शनि-बद	7
मंगल-बद	10	राहु	1
बुध-बद	4	केतु-बद	7
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 4
(18:12:1976 - 17:12:1977)

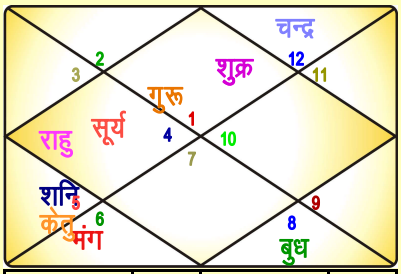

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	4	शुक्र-बद	1
चन्द्रमा	12	शनि-बद	5
मंगल-बद	6	राहु	4
बुध-बद	8	केतु-बद	5
गुरू-बद	1		

वर्ष पूर्ण– 5
(18:12:1977 - 17:12:1978)

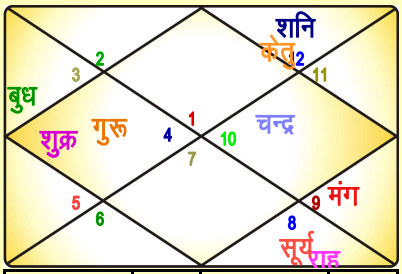

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र	4
चन्द्रमा	10	शनि	12
मंगल-बद	9	राहु-बद	8
बुध-बद	3	केतु-बद	12
गुरू	4		

वर्ष पूर्ण– 6
(18:12:1978 - 17:12:1979)

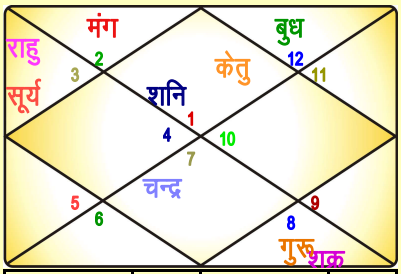

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा-बद	7	शनि-बद	1
मंगल	2	राहु-बद	3
बुध-बद	12	केतु-बद	1
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 7
(18:12:1979 - 17:12:1980)

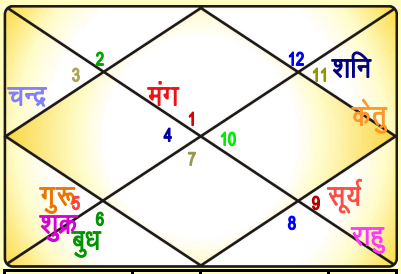

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	9	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा	3	शनि-बद	11
मंगल	1	राहु	9
बुध-बद	6	केतु-बद	11
गुरू-बद	5		

वर्ष पूर्ण– 8
(18:12:1980 - 17:12:1981)

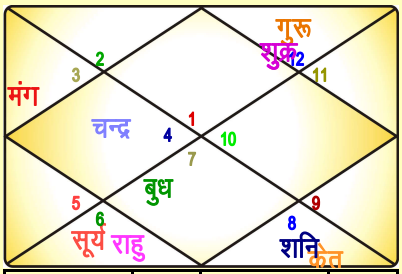

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा	4	शनि-बद	8
मंगल	3	राहु	6
बुध-बद	7	केतु-बद	8
गुरू-बद	12		

वर्ष पूर्ण– 9
(18:12:1981 - 17:12:1982)

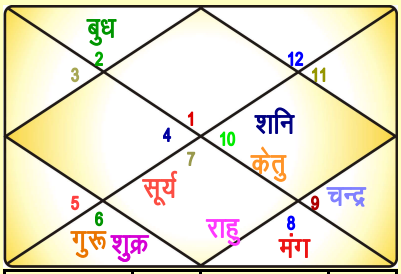

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा	9	शनि	10
मंगल-बद	8	राहु-बद	7
बुध-बद	2	केतु	10
गुरू	6		

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्ष पूर्ण– 82
(18:12:2054 - 17:12:2055)

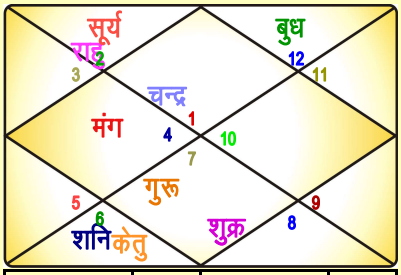

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	2	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	6
मंगल	4	राह	2
बुध-बद	12	केतु-बद	6
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 83
(18:12:2055 - 17:12:2056)

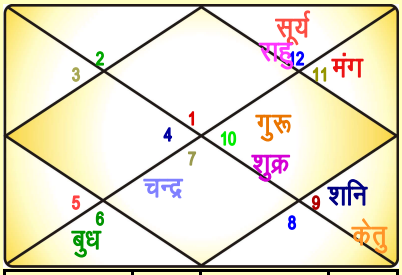

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र	10
चन्द्रमा	7	शनि	9
मंगल-बद	11	राह-बद	12
बुध	6	केतु	9
गुरू	10		

वर्ष पूर्ण– 84
(18:12:2056 - 17:12:2057)

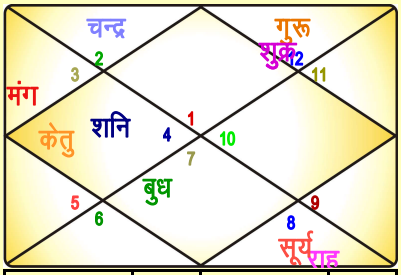

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा	2	शनि	4
मंगल	3	राह-बद	8
बुध-बद	7	केतु-बद	4
गुरू-बद	12		

वर्ष पूर्ण– 85
(18:12:2057 - 17:12:2058)

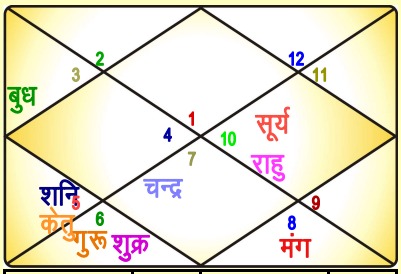

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा	7	शनि	5
मंगल-बद	8	राह-बद	10
बुध-बद	3	केतु-बद	5
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 86
(18:12:2058 - 17:12:2059)

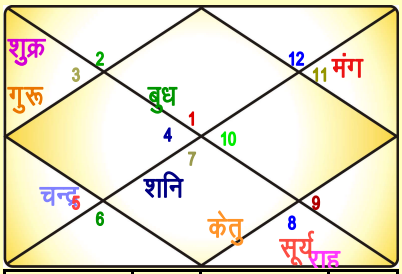

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र	3
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	7
मंगल	11	राह-बद	8
बुध-बद	1	केतु	7
गुरू	3		

वर्ष पूर्ण– 87
(18:12:2059 - 17:12:2060)

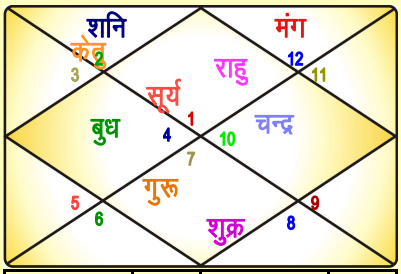

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	10	शनि	2
मंगल-बद	12	राह	1
बुध	4	केतु	2
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 88
(18:12:2060 - 17:12:2061)

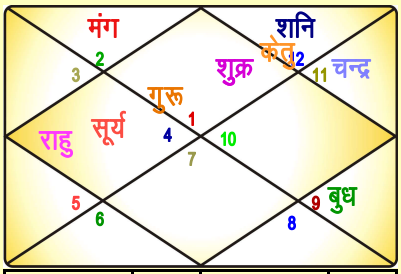

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	1
चन्द्रमा	11	शनि	12
मंगल-बद	2	राह-बद	4
बुध-बद	9	केतु-बद	12
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 89
(18:12:2061 - 17:12:2062)

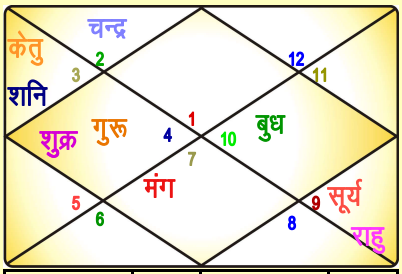

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	2	शनि-बद	3
मंगल-बद	7	राह-बद	9
बुध	10	केतु-बद	3
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 90
(18:12:2062 - 17:12:2063)

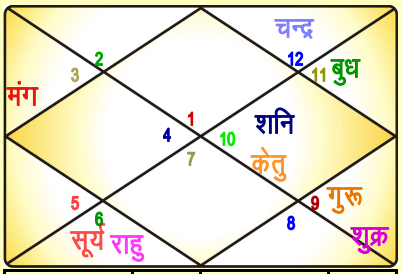

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	6	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा	12	शनि	10
मंगल-बद	3	राह	6
बुध-बद	11	केतु	10
गुरू-बद	9		

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्ष पूर्ण– 10
(18:12:1982 - 17:12:1983)

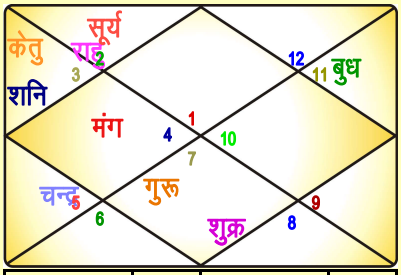

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	2	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	5	शनि	3
मंगल-बद	4	राहु	2
बुध	11	केतु-बद	3
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 11
(18:12:1983 - 17:12:1984)

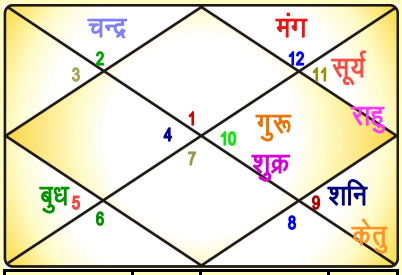

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	11	शुक्र-बद	10
चन्द्रमा-बद	2	शनि	9
मंगल	12	राहु	11
बुध-बद	5	केतु	9
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 12
(18:12:1984 - 17:12:1985)

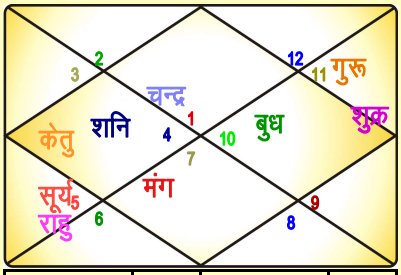

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	5	शुक्र	11
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	4
मंगल	7	राहु	5
बुध-बद	10	केतु-बद	4
गुरू-बद	11		

वर्ष पूर्ण– 13
(18:12:1985 - 17:12:1986)

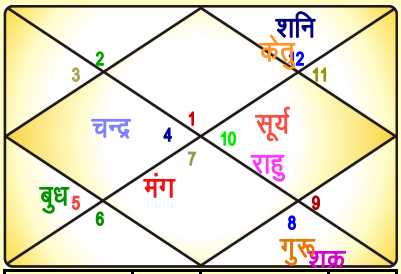

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा-बद	4	शनि-बद	12
मंगल	7	राहु-बद	10
बुध-बद	5	केतु-बद	12
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 14
(18:12:1986 - 17:12:1987)

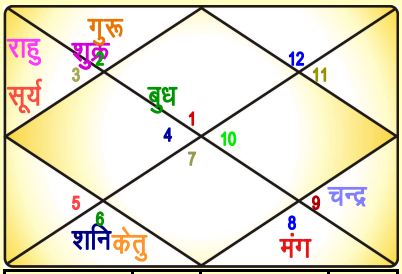

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	2
चन्द्रमा	9	शनि-बद	6
मंगल-बद	8	राहु	3
बुध-बद	1	केतु-बद	6
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 15
(18:12:1987 - 17:12:1988)

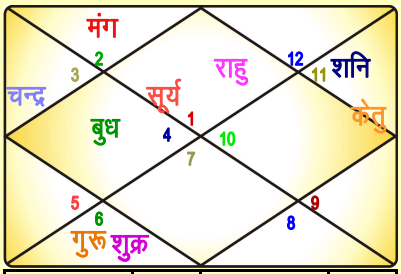

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा	3	शनि-बद	11
मंगल	2	राहु	1
बुध-बद	4	केतु-बद	11
गुरू-बद	6		

वर्ष पूर्ण– 16
(18:12:1988 - 17:12:1989)

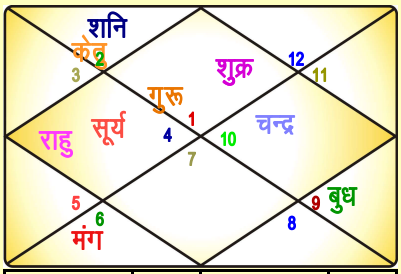

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	1
चन्द्रमा	10	शनि-बद	2
मंगल-बद	6	राहु	4
बुध-बद	9	केतु-बद	2
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 17
(18:12:1989 - 17:12:1990)

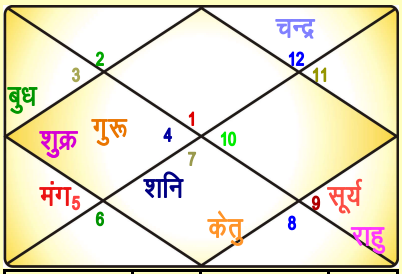

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	12	शनि-बद	7
मंगल-बद	5	राहु-बद	9
बुध-बद	3	केतु	7
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 18
(18:12:1990 - 17:12:1991)

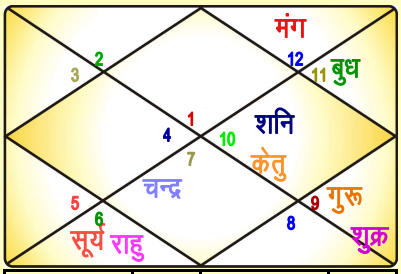

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	6	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा	7	शनि	10
मंगल-बद	12	राहु	6
बुध-बद	11	केतु	10
गुरू-बद	9		

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्ष पूर्ण– 19
(18:12:1991 - 17:12:1992)

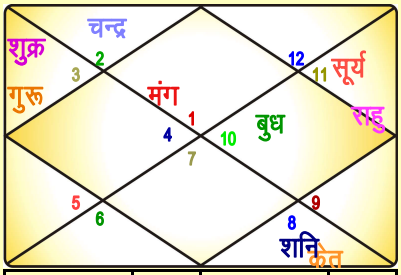

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	11	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा	2	शनि-बद	8
मंगल-बद	1	राहु	11
बुध	10	केतु-बद	8
गुरू-बद	3		

वर्ष पूर्ण– 20
(18:12:1992 - 17:12:1993)

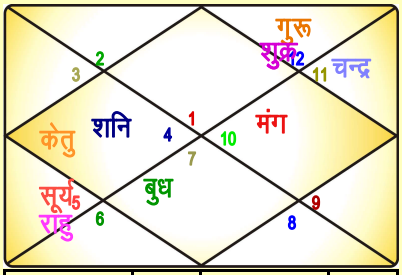

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा	11	शनि-बद	4
मंगल-बद	10	राहु-बद	5
बुध-बद	7	केतु-बद	4
गुरू-बद	12		

वर्ष पूर्ण– 21
(18:12:1993 - 17:12:1994)

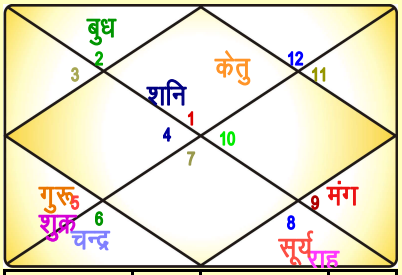

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	6	शनि-बद	1
मंगल	9	राहु	8
बुध-बद	2	केतु-बद	1
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 22
(18:12:1994 - 17:12:1995)

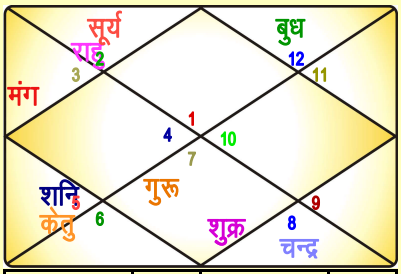

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	8	शनि-बद	5
मंगल-बद	3	राहु	2
बुध-बद	12	केतु-बद	5
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 23
(18:12:1995 - 17:12:1996)

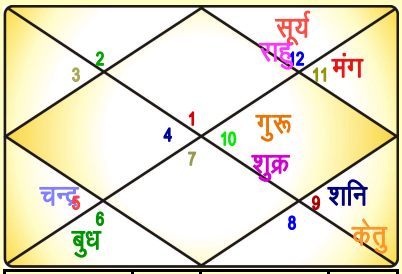

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	12	शुक्र-बद	10
चन्द्रमा-बद	5	शनि	9
मंगल-बद	11	राहु	12
बुध	6	केतु	9
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 24
(18:12:1996 - 17:12:1997)

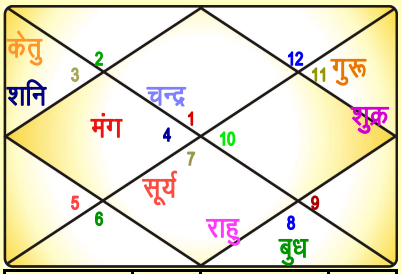

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र	11
चन्द्रमा-बद	1	शनि	3
मंगल-बद	4	राहु	7
बुध-बद	8	केतु-बद	3
गुरू-बद	11		

वर्ष पूर्ण– 25
(18:12:1997 - 17:12:1998)

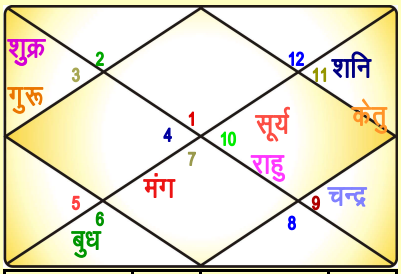

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा-बद	9	शनि-बद	11
मंगल	7	राहु	10
बुध	6	केतु-बद	11
गुरू-बद	3		

वर्ष पूर्ण– 26
(18:12:1998 - 17:12:1999)

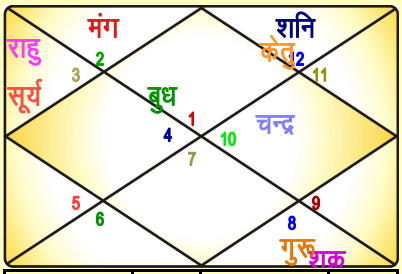

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा	10	शनि	12
मंगल	2	राहु-बद	3
बुध-बद	1	केतु-बद	12
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 27
(18:12:1999 - 17:12:2000)

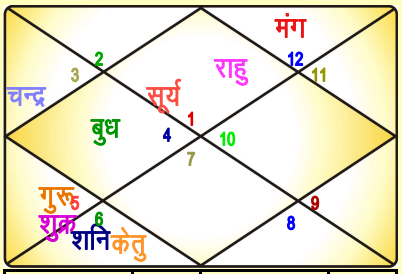

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा	3	शनि-बद	6
मंगल-बद	12	राहु	1
बुध	4	केतु-बद	6
गुरू-बद	5		

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्ष पूर्ण– 28
(18:12:2000 - 17:12:2001)

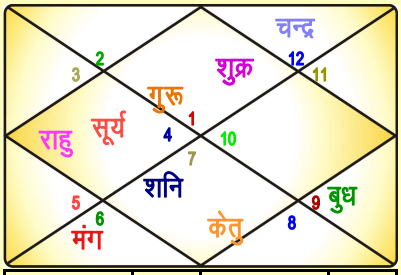

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	1
चन्द्रमा-बद	12	शनि-बद	7
मंगल-बद	6	राह	4
बुध-बद	9	केतु	7
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 29
(18:12:2001 - 17:12:2002)

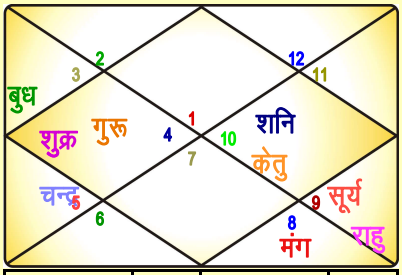

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	10
मंगल-बद	8	राह-बद	9
बुध-बद	3	केतु-बद	10
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 30
(18:12:2002 - 17:12:2003)

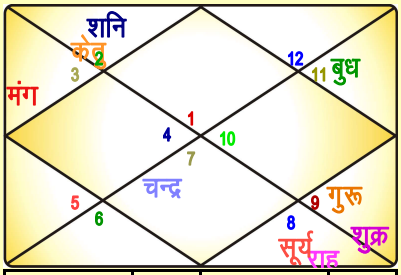

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा-बद	7	शनि-बद	2
मंगल-बद	3	राह-बद	8
बुध	11	केतु-बद	2
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 31
(18:12:2003 - 17:12:2004)

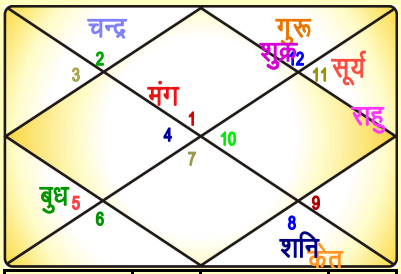

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	11	शुक्र	12
चन्द्रमा	2	शनि	8
मंगल-बद	1	राह	11
बुध-बद	5	केतु	8
गुरू	12		

वर्ष पूर्ण– 32
(18:12:2004 - 17:12:2005)

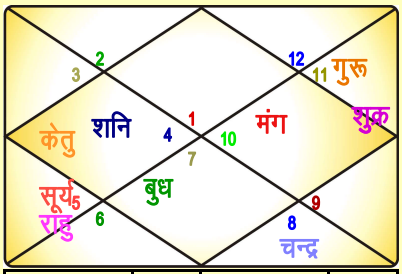

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	5	शुक्र	11
चन्द्रमा-बद	8	शनि-बद	4
मंगल-बद	10	राह	5
बुध-बद	7	केतु-बद	4
गुरू	11		

वर्ष पूर्ण– 33
(18:12:2005 - 17:12:2006)

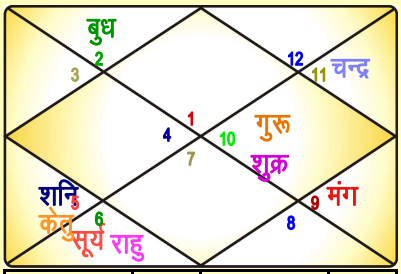

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	6	शुक्र-बद	10
चन्द्रमा-बद	11	शनि	5
मंगल	9	राह	6
बुध-बद	2	केतु-बद	5
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 34
(18:12:2006 - 17:12:2007)

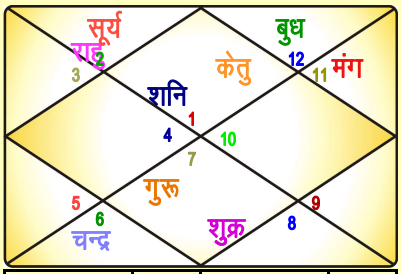

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	2	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	6	शनि-बद	1
मंगल-बद	11	राह	2
बुध-बद	12	केतु	1
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 35
(18:12:2007 - 17:12:2008)

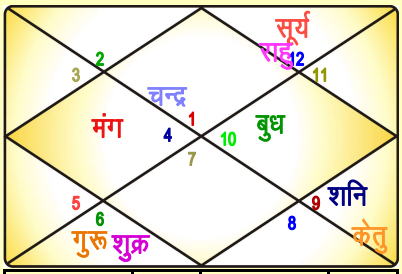

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	12	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा	1	शनि-बद	9
मंगल	4	राह	12
बुध	10	केतु-बद	9
गुरू-बद	6		

वर्ष पूर्ण– 36
(18:12:2008 - 17:12:2009)

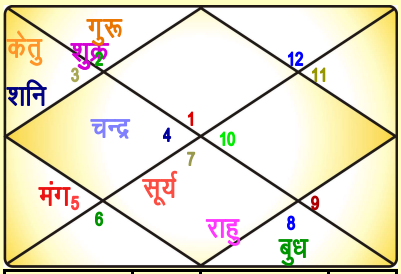

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र	2
चन्द्रमा	4	शनि	3
मंगल	5	राह-बद	7
बुध-बद	8	केतु-बद	3
गुरू	2		

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्ष पूर्ण– 37
(18:12:2009 - 17:12:2010)

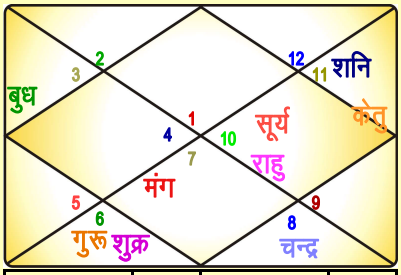

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	8	शनि-बद	11
मंगल	7	राहु	10
बुध-बद	3	केतु-बद	11
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 38
(18:12:2010 - 17:12:2011)

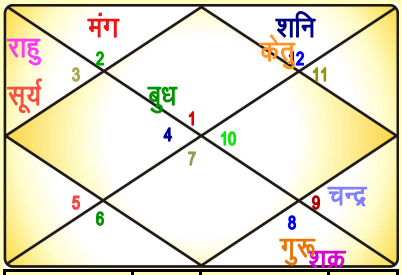

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा	9	शनि	12
मंगल-बद	2	राहु-बद	3
बुध-बद	1	केतु-बद	12
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 39
(18:12:2011 - 17:12:2012)

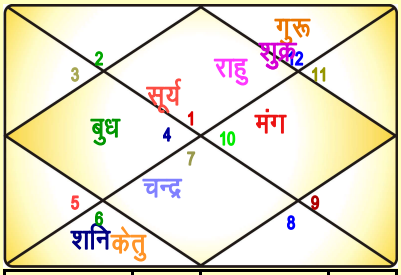

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	1	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा	7	शनि-बद	6
मंगल	10	राहु	1
बुध	4	केतु-बद	6
गुरू-बद	12		

वर्ष पूर्ण– 40
(18:12:2012 - 17:12:2013)

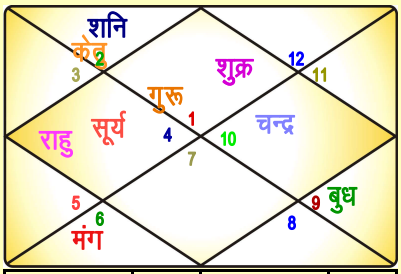

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	1
चन्द्रमा	10	शनि-बद	2
मंगल-बद	6	राहु	4
बुध-बद	9	केतु-बद	2
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 41
(18:12:2013 - 17:12:2014)

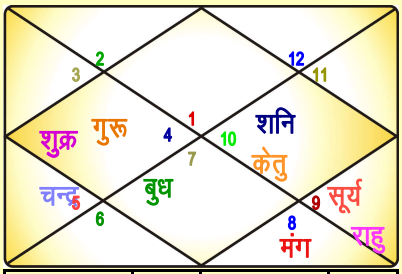

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	10
मंगल	8	राहु-बद	9
बुध-बद	7	केतु-बद	10
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 42
(18:12:2014 - 17:12:2015)

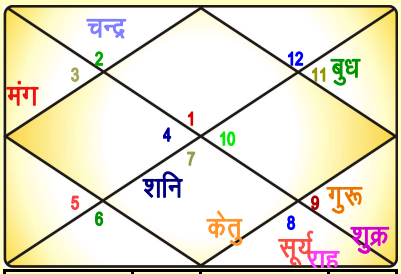

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा-बद	2	शनि-बद	7
मंगल-बद	3	राहु-बद	8
बुध	11	केतु-बद	7
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 43
(18:12:2015 - 17:12:2016)

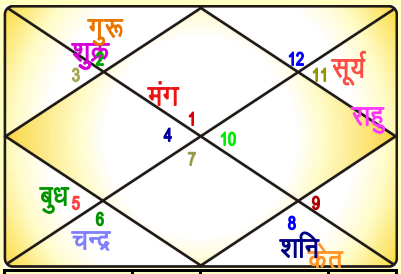

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र	2
चन्द्रमा-बद	6	शनि-बद	8
मंगल-बद	1	राहु-बद	11
बुध	5	केतु	8
गुरू	2		

वर्ष पूर्ण– 44
(18:12:2016 - 17:12:2017)

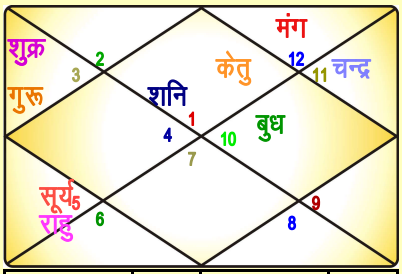

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा	11	शनि	1
मंगल	12	राहु-बद	5
बुध-बद	10	केतु	1
गुरू-बद	3		

वर्ष पूर्ण– 45
(18:12:2017 - 17:12:2018)

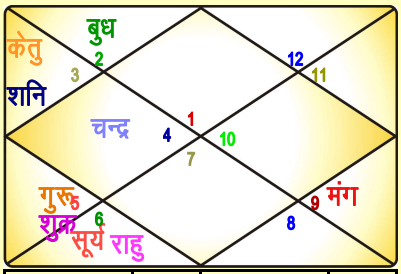

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	6	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा	4	शनि	3
मंगल-बद	9	राहु	6
बुध-बद	2	केतु-बद	3
गुरू	5		

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्ष पूर्ण– 46
(18:12:2018 - 17:12:2019)

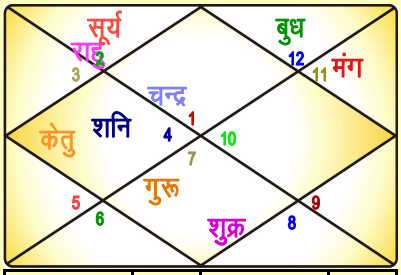

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	2	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा	1	शनि-बद	4
मंगल-बद	11	राहु	2
बुध-बद	12	केतु-बद	4
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 47
(18:12:2019 - 17:12:2020)

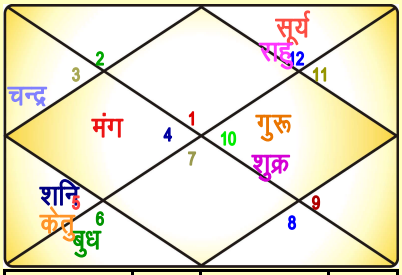

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	12	शुक्र-बद	10
चन्द्रमा-बद	3	शनि-बद	5
मंगल	4	राहु	12
बुध-बद	6	केतु-बद	5
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 48
(18:12:2020 - 17:12:2021)

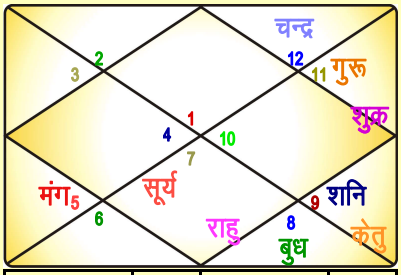

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र	11
चन्द्रमा-बद	12	शनि	9
मंगल-बद	5	राहु	7
बुध	8	केतु	9
गुरू	11		

वर्ष पूर्ण– 49
(18:12:2021 - 17:12:2022)

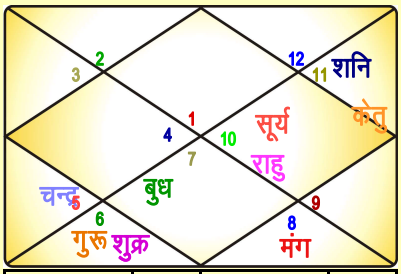

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	11
मंगल-बद	8	राहु-बद	10
बुध-बद	7	केतु-बद	11
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 50
(18:12:2022 - 17:12:2023)

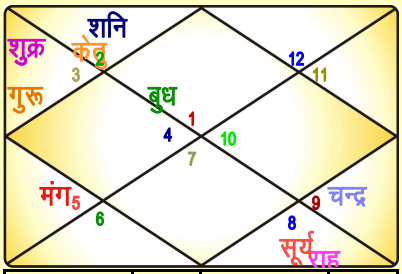

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र	3
चन्द्रमा-बद	9	शनि-बद	2
मंगल	5	राहु-बद	8
बुध-बद	1	केतु-बद	2
गुरू	3		

वर्ष पूर्ण– 51
(18:12:2023 - 17:12:2024)

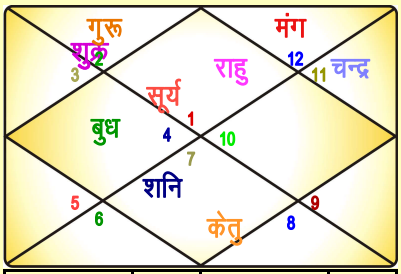

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	1	शुक्र	2
चन्द्रमा	11	शनि-बद	7
मंगल-बद	12	राहु	1
बुध-बद	4	केतु-बद	7
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 52
(18:12:2024 - 17:12:2025)

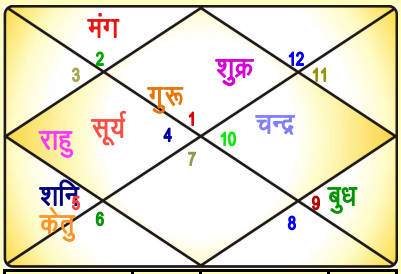

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	1
चन्द्रमा-बद	10	शनि	5
मंगल-बद	2	राहु	4
बुध-बद	9	केतु-बद	5
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 53
(18:12:2025 - 17:12:2026)

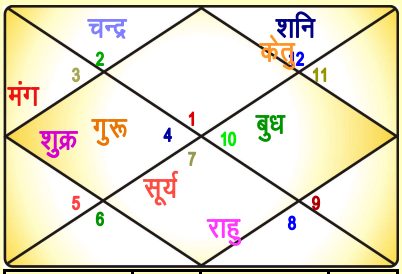

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	2	शनि-बद	12
मंगल-बद	3	राहु-बद	7
बुध	10	केतु-बद	12
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 54
(18:12:2026 - 17:12:2027)

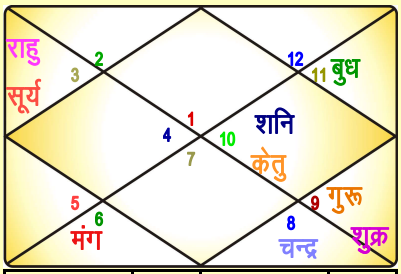

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा-बद	8	शनि	10
मंगल	6	राहु-बद	3
बुध-बद	11	केतु	10
गुरू-बद	9		

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्ष पूर्ण– 55
(18:12:2027 - 17:12:2028)

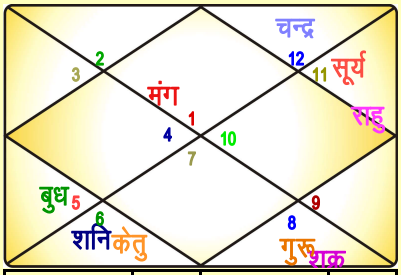

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा	12	शनि-बद	6
मंगल-बद	1	राह-बद	11
बुध-बद	5	केतु-बद	6
गुरू	8		

वर्ष पूर्ण– 56
(18:12:2028 - 17:12:2029)

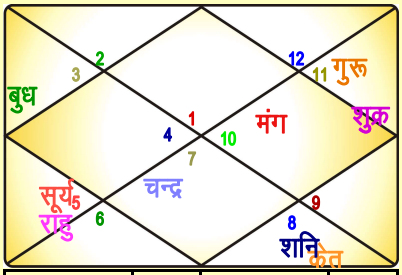

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	5	शुक्र-बद	11
चन्द्रमा	7	शनि-बद	8
मंगल-बद	10	राह	5
बुध-बद	3	केतु-बद	8
गुरू	11		

वर्ष पूर्ण– 57
(18:12:2029 - 17:12:2030)

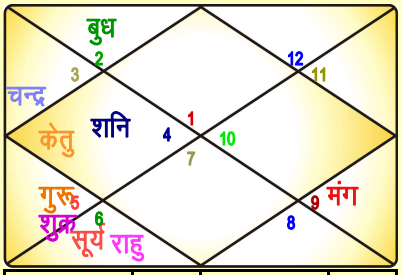

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	6	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा	3	शनि	4
मंगल-बद	9	राह	6
बुध-बद	2	केतु-बद	4
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 58
(18:12:2030 - 17:12:2031)

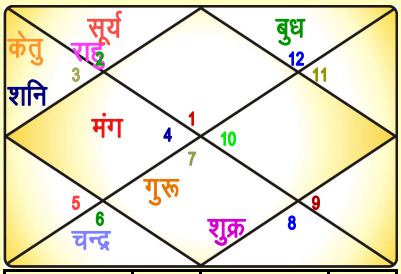

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	2	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	6	शनि	3
मंगल	4	राह	2
बुध-बद	12	केतु-बद	3
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 59
(18:12:2031 - 17:12:2032)

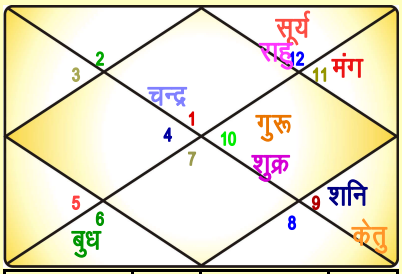

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	12	शुक्र	10
चन्द्रमा	1	शनि	9
मंगल-बद	11	राह	12
बुध-बद	6	केतु	9
गुरू	10		

वर्ष पूर्ण– 60
(18:12:2032 - 17:12:2033)

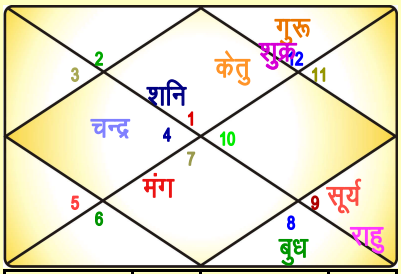

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा	4	शनि-बद	1
मंगल-बद	7	राह-बद	9
बुध	8	केतु-बद	1
गुरू-बद	12		

वर्ष पूर्ण– 61
(18:12:2033 - 17:12:2034)

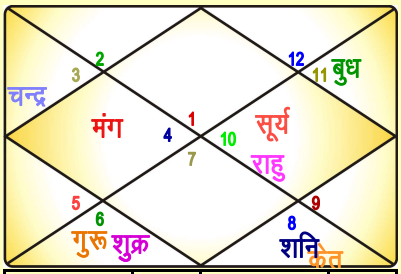

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	10	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	3	शनि-बद	8
मंगल-बद	4	राह	10
बुध-बद	11	केतु-बद	8
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 62
(18:12:2034 - 17:12:2035)

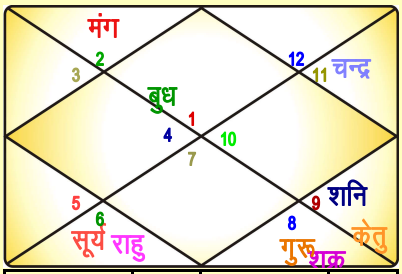

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र	8
चन्द्रमा-बद	11	शनि	9
मंगल-बद	2	राह-बद	6
बुध-बद	1	केतु	9
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 63
(18:12:2035 - 17:12:2036)

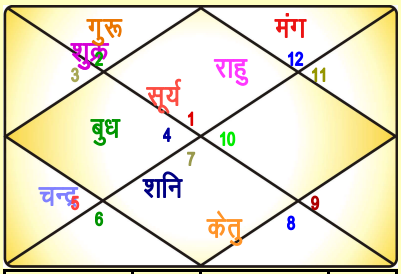

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	1	शुक्र	2
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	7
मंगल-बद	12	राह	1
बुध	4	केतु-बद	7
गुरू-बद	2		

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्ष पूर्ण– 64
(18:12:2036 - 17:12:2037)

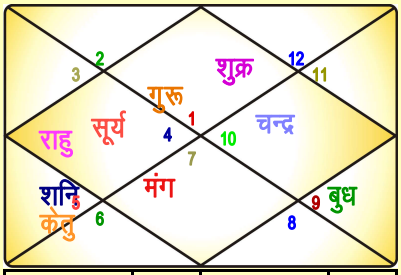

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र	1
चन्द्रमा-बद	10	शनि	5
मंगल	7	राहु	4
बुध-बद	9	केतु-बद	5
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 65
(18:12:2037 - 17:12:2038)

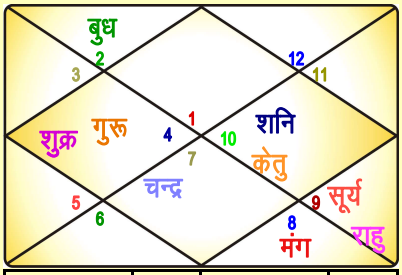

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	7	शनि	10
मंगल-बद	8	राहु-बद	9
बुध-बद	2	केतु	10
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 66
(18:12:2038 - 17:12:2039)

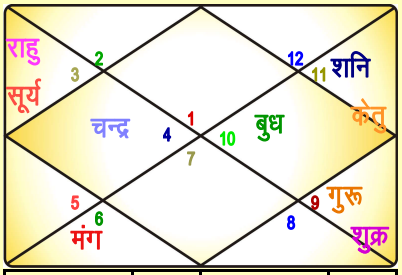

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा-बद	4	शनि-बद	11
मंगल	6	राहु-बद	3
बुध	10	केतु-बद	11
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 67
(18:12:2039 - 17:12:2040)

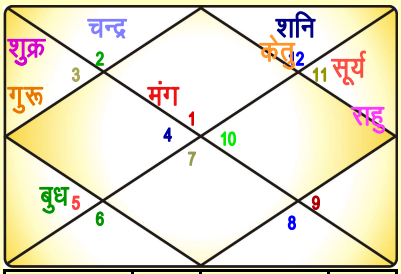

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	11	शुक्र	3
चन्द्रमा-बद	2	शनि	12
मंगल	1	राहु	11
बुध-बद	5	केतु-बद	12
गुरू	3		

वर्ष पूर्ण– 68
(18:12:2040 - 17:12:2041)

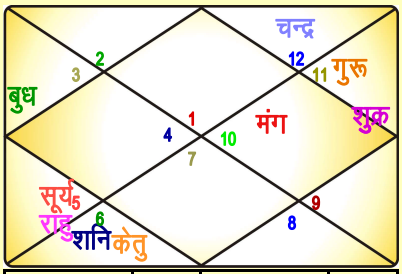

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र-बद	11
चन्द्रमा	12	शनि	6
मंगल-बद	10	राहु-बद	5
बुध-बद	3	केतु	6
गुरू-बद	11		

वर्ष पूर्ण– 69
(18:12:2041 - 17:12:2042)

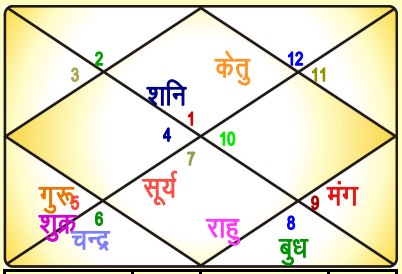

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	7	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	6	शनि-बद	1
मंगल	9	राहु	7
बुध-बद	8	केतु-बद	1
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 70
(18:12:2042 - 17:12:2043)

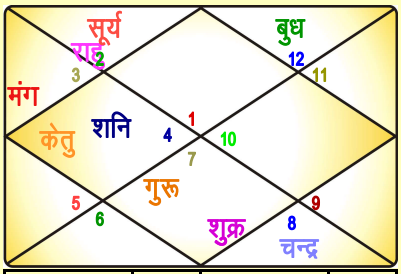

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा-बद	8	शनि	4
मंगल-बद	3	राहु	2
बुध-बद	12	केतु-बद	4
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 71
(18:12:2043 - 17:12:2044)

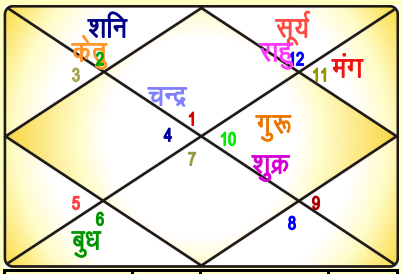

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	12	शुक्र	10
चन्द्रमा	1	शनि-बद	2
मंगल-बद	11	राहु	12
बुध-बद	6	केतु	2
गुरू	10		

वर्ष पूर्ण– 72
(18:12:2044 - 17:12:2045)

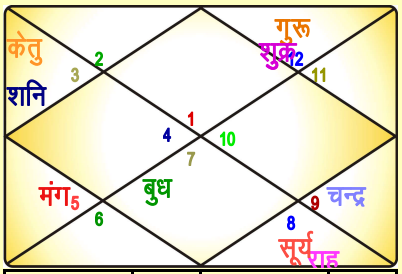

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा	9	शनि	3
मंगल-बद	5	राहु-बद	8
बुध-बद	7	केतु	3
गुरू-बद	12		

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्ष पूर्ण– 73
(18:12:2045 - 17:12:2046)

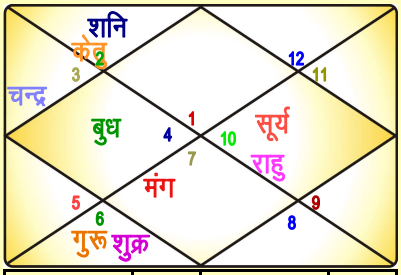

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	10	शुक्र	6
चन्द्रमा-बद	3	शनि	2
मंगल-बद	7	राहु	10
बुध	4	केतु	2
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 74
(18:12:2046 - 17:12:2047)

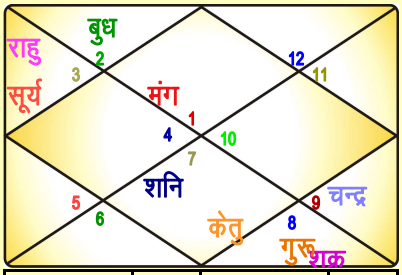

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा	9	शनि-बद	7
मंगल-बद	1	राहु	3
बुध-बद	2	केतु-बद	7
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 75
(18:12:2047 - 17:12:2048)

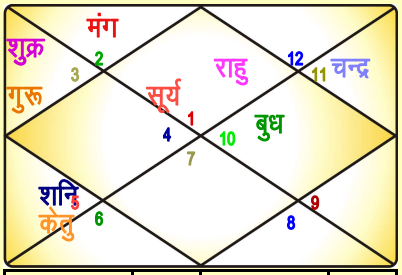

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र-बद	3
चन्द्रमा	11	शनि	5
मंगल	2	राहु	1
बुध-बद	10	केतु-बद	5
गुरू-बद	3		

वर्ष पूर्ण– 76
(18:12:2048 - 17:12:2049)

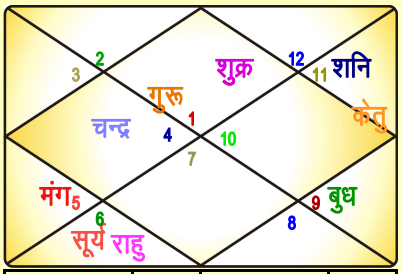

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र	1
चन्द्रमा-बद	4	शनि-बद	11
मंगल	5	राहु-बद	6
बुध-बद	9	केतु-बद	11
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 77
(18:12:2049 - 17:12:2050)

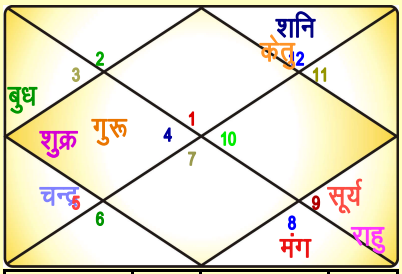

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	5	शनि	12
मंगल-बद	8	राहु-बद	9
बुध-बद	3	केतु-बद	12
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 78
(18:12:2050 - 17:12:2051)

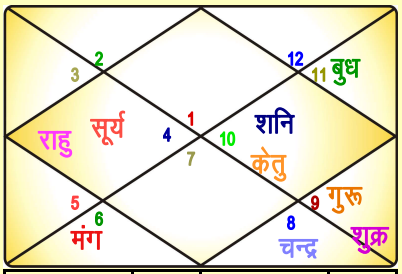

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	4	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा	8	शनि-बद	10
मंगल	6	राहु-बद	4
बुध-बद	11	केतु	10
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 79
(18:12:2051 - 17:12:2052)

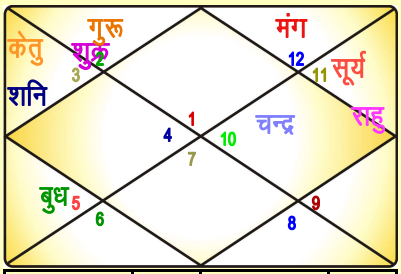

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	11	शुक्र	2
चन्द्रमा-बद	10	शनि-बद	3
मंगल	12	राहु	11
बुध-बद	5	केतु-बद	3
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 80
(18:12:2052 - 17:12:2053)

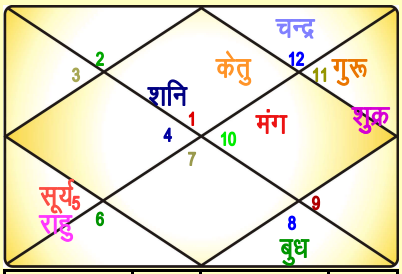

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र	11
चन्द्रमा	12	शनि-बद	1
मंगल-बद	10	राहु-बद	5
बुध	8	केतु-बद	1
गुरू	11		

वर्ष पूर्ण– 81
(18:12:2053 - 17:12:2054)

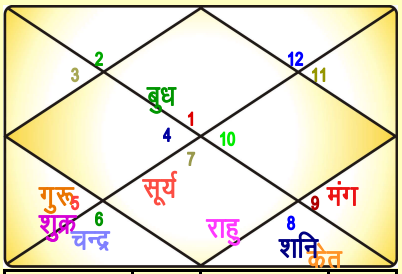

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	7	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	6	शनि-बद	8
मंगल	9	राहु	7
बुध-बद	1	केतु	8
गुरू	5		

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्ष पूर्ण– 91
(18:12:2063 - 17:12:2064)

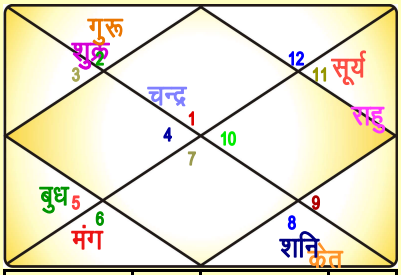

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र	2
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	8
मंगल-बद	6	राह-बद	11
बुध	5	केतु	8
गुरू	2		

वर्ष पूर्ण– 92
(18:12:2064 - 17:12:2065)

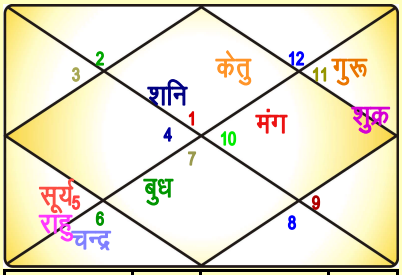

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	5	शुक्र-बद	11
चन्द्रमा-बद	6	शनि-बद	1
मंगल-बद	10	राह	5
बुध-बद	7	केतु	1
गुरू-बद	11		

वर्ष पूर्ण– 93
(18:12:2065 - 17:12:2066)

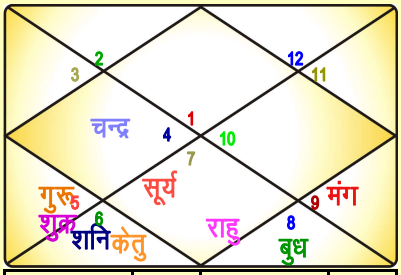

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा	4	शनि	6
मंगल-बद	9	राह	7
बुध-बद	8	केतु	6
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 94
(18:12:2066 - 17:12:2067)

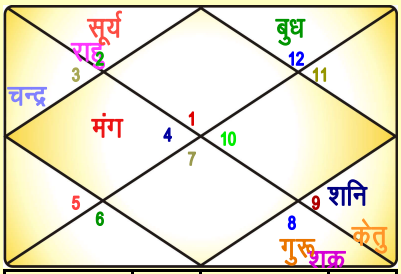

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा	3	शनि-बद	9
मंगल-बद	4	राह-बद	2
बुध-बद	12	केतु-बद	9
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 95
(18:12:2067 - 17:12:2068)

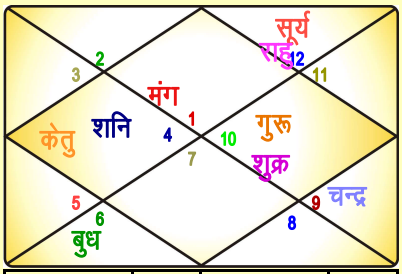

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	12	शुक्र	10
चन्द्रमा-बद	9	शनि	4
मंगल	1	राह	12
बुध-बद	6	केतु	4
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 96
(18:12:2068 - 17:12:2069)

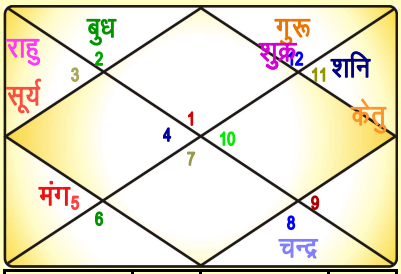

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र	12
चन्द्रमा-बद	8	शनि	11
मंगल-बद	5	राह-बद	3
बुध-बद	2	केतु	11
गुरू	12		

वर्ष पूर्ण– 97
(18:12:2069 - 17:12:2070)

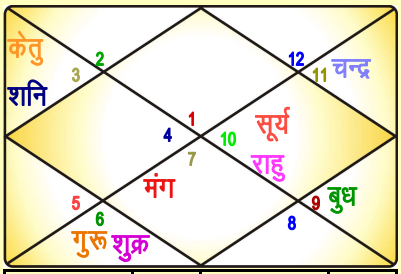

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा-बद	11	शनि-बद	3
मंगल	7	राह	10
बुध-बद	9	केतु-बद	3
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 98
(18:12:2070 - 17:12:2071)

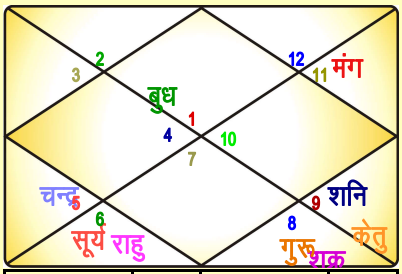

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा-बद	5	शनि	9
मंगल-बद	11	राह-बद	6
बुध-बद	1	केतु	9
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 99
(18:12:2071 - 17:12:2072)

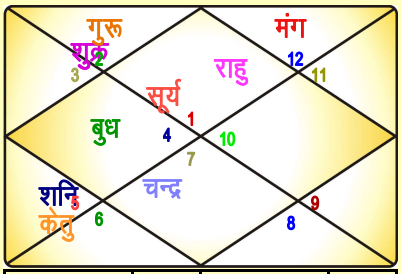

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	1	शुक्र	2
चन्द्रमा-बद	7	शनि-बद	5
मंगल-बद	12	राह	1
बुध	4	केतु-बद	5
गुरू-बद	2		

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्ष पूर्ण– 100
(18:12:2072 - 17:12:2073)

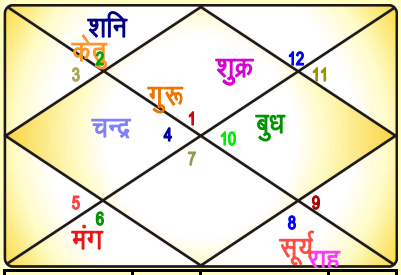

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	8	शुक्र-बद	1
चन्द्रमा	4	शनि-बद	2
मंगल-बद	6	राह-बद	8
बुध	10	केतु	2
गुरू-बद	1		

वर्ष पूर्ण– 101
(18:12:2073 - 17:12:2074)

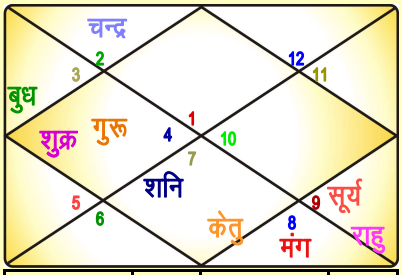

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	2	शनि-बद	7
मंगल-बद	8	राह-बद	9
बुध-बद	3	केतु-बद	7
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 102
(18:12:2074 - 17:12:2075)

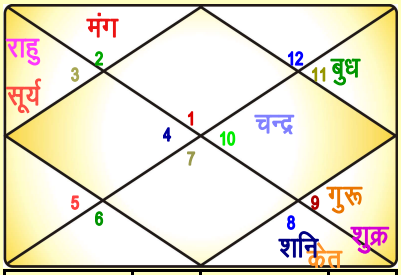

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा	10	शनि-बद	8
मंगल-बद	2	राह-बद	3
बुध	11	केतु-बद	8
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 103
(18:12:2075 - 17:12:2076)

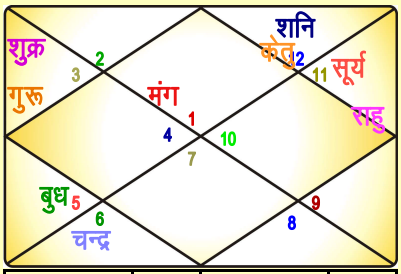

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र	3
चन्द्रमा-बद	6	शनि	12
मंगल	1	राह-बद	11
बुध-बद	5	केतु-बद	12
गुरू	3		

वर्ष पूर्ण– 104
(18:12:2076 - 17:12:2077)

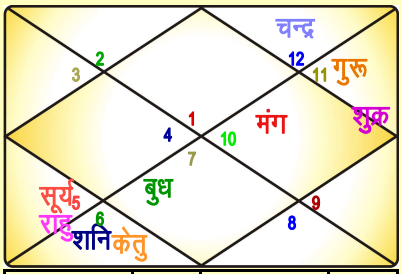

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	5	शुक्र-बद	11
चन्द्रमा-बद	12	शनि	6
मंगल-बद	10	राह-बद	5
बुध-बद	7	केतु	6
गुरू-बद	11		

वर्ष पूर्ण– 105
(18:12:2077 - 17:12:2078)

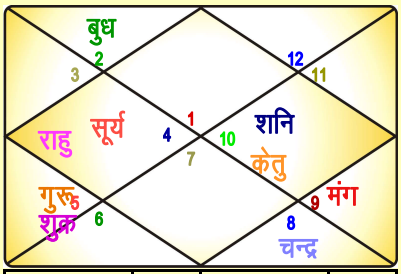

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	4	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा	8	शनि-बद	10
मंगल-बद	9	राह	4
बुध-बद	2	केतु-बद	10
गुरू	5		

वर्ष पूर्ण– 106
(18:12:2078 - 17:12:2079)

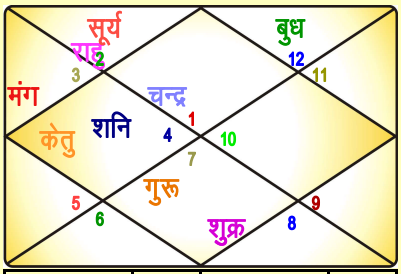

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	2	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा	1	शनि	4
मंगल-बद	3	राह	2
बुध-बद	12	केतु-बद	4
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 107
(18:12:2079 - 17:12:2080)

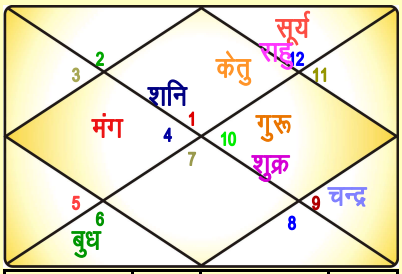

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	12	शुक्र	10
चन्द्रमा-बद	9	शनि-बद	1
मंगल-बद	4	राह	12
बुध-बद	6	केतु	1
गुरू-बद	10		

वर्ष पूर्ण– 108
(18:12:2080 - 17:12:2081)

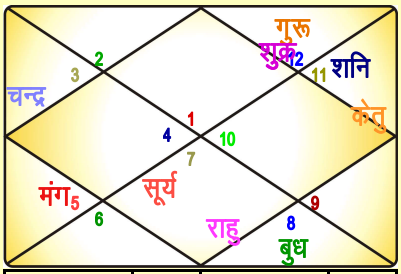

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	7	शुक्र-बद	12
चन्द्रमा	3	शनि	11
मंगल-बद	5	राह	7
बुध-बद	8	केतु	11
गुरू-बद	12		

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्ष पूर्ण– 109
(18:12:2081 - 17:12:2082)

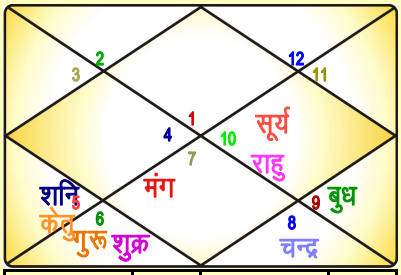

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	10	शुक्र-बद	6
चन्द्रमा	8	शनि	5
मंगल	7	राहु-बद	10
बुध-बद	9	केतु-बद	5
गुरू	6		

वर्ष पूर्ण– 110
(18:12:2082 - 17:12:2083)

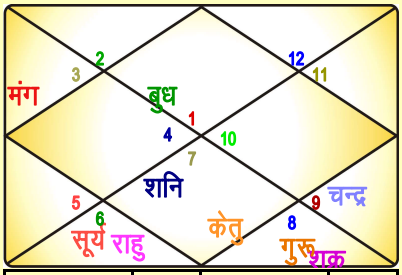

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	6	शुक्र-बद	8
चन्द्रमा	9	शनि-बद	7
मंगल-बद	3	राहु-बद	6
बुध-बद	1	केतु	7
गुरू-बद	8		

वर्ष पूर्ण– 111
(18:12:2083 - 17:12:2084)

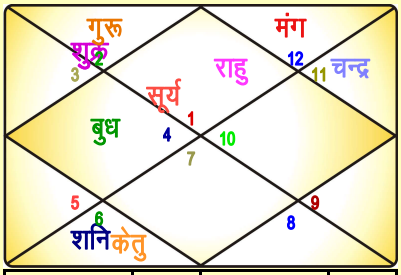

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	1	शुक्र	2
चन्द्रमा-बद	11	शनि-बद	6
मंगल-बद	12	राहु	1
बुध-बद	4	केतु-बद	6
गुरू-बद	2		

वर्ष पूर्ण– 112
(18:12:2084 - 17:12:2085)

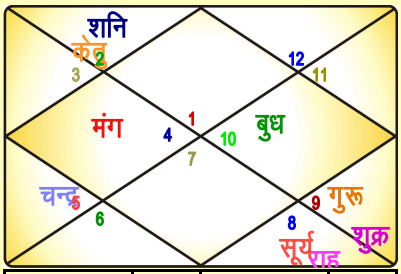

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	8	शुक्र-बद	9
चन्द्रमा-बद	5	शनि-बद	2
मंगल	4	राहु-बद	8
बुध-बद	10	केतु-बद	2
गुरू-बद	9		

वर्ष पूर्ण– 113
(18:12:2085 - 17:12:2086)

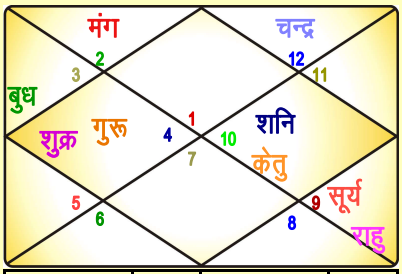

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	9	शुक्र	4
चन्द्रमा	12	शनि	10
मंगल-बद	2	राहु-बद	9
बुध-बद	3	केतु	10
गुरू-बद	4		

वर्ष पूर्ण– 114
(18:12:2086 - 17:12:2087)

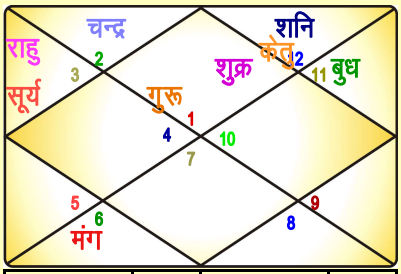

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र	1
चन्द्रमा-बद	2	शनि	12
मंगल-बद	6	राहु-बद	3
बुध-बद	11	केतु-बद	12
गुरू	1		

वर्ष पूर्ण– 115
(18:12:2087 - 17:12:2088)

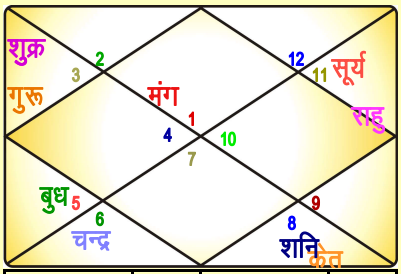

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	11	शुक्र	3
चन्द्रमा-बद	6	शनि-बद	8
मंगल-बद	1	राहु-बद	11
बुध	5	केतु-बद	8
गुरू	3		

वर्ष पूर्ण– 116
(18:12:2088 - 17:12:2089)

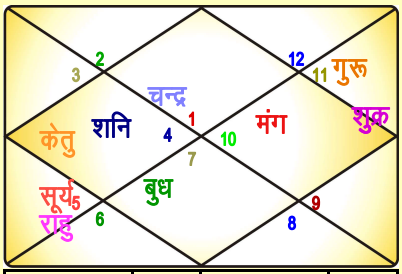

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	5	शुक्र	11
चन्द्रमा-बद	1	शनि-बद	4
मंगल-बद	10	राहु	5
बुध	7	केतु-बद	4
गुरू-बद	11		

वर्ष पूर्ण– 117
(18:12:2089 - 17:12:2090)

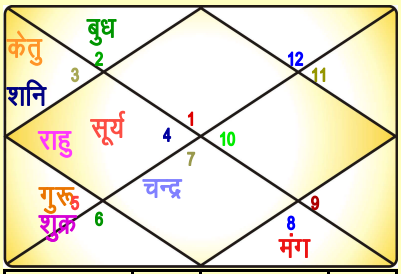

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	4	शुक्र-बद	5
चन्द्रमा-बद	7	शनि	3
मंगल-बद	8	राहु	4
बुध	2	केतु-बद	3
गुरू	5		

लाल किताब वर्षफल (के. पी. कस्प)

वर्ष पूर्ण– 118
(18:12:2090 - 17:12:2091)

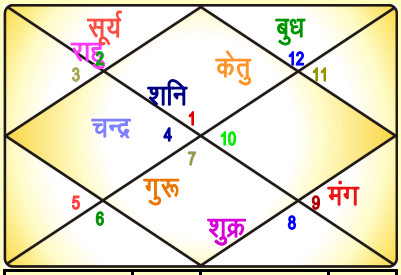

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	2	शुक्र-बद	7
चन्द्रमा	4	शनि-बद	1
मंगल-बद	9	राह्-बद	2
बुध-बद	12	केतु	1
गुरू-बद	7		

वर्ष पूर्ण– 119
(18:12:2091 - 17:12:2092)

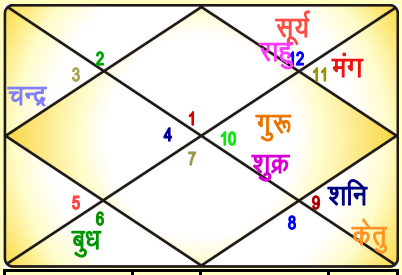

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य	12	शुक्र	10
चन्द्रमा-बद	3	शनि	9
मंगल-बद	11	राह्	12
बुध	6	केतु-बद	9
गुरू	10		

वर्ष पूर्ण– 120
(18:12:2092 - 17:12:2093)

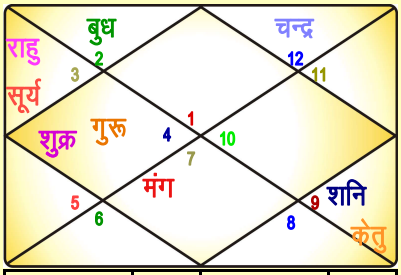

ग्रह	भाव	ग्रह	भाव
सूर्य-बद	3	शुक्र	4
चन्द्रमा-बद	12	शनि-बद	9
मंगल-बद	7	राह्-बद	3
बुध-बद	2	केतु-बद	9
गुरू-बद	4		

लाल किताब उपाय से संबंधित सावधानियां और सामान्य नियम

1– एक दिन में केवल एक ही उपाय करें। एक उपाय समाप्त हो जाने के बाद अगले दिन से दूसरा उपायशुरू करें।

2– सभी उपाय सूर्योदय के बाद एवं सूर्यास्त से पहले करें। जो उपाय सूर्यास्त के बाद करने के लिए लिखा गया है, केवल उसे ही सूर्यास्त के बाद करें।

3– सबसे पहले छोटे उपाय, जो एक दिन के होते हैं, उन्हें करना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कोई ऋण है तो पहले ऋण वाले उपाय करें।

4– कुछ उपाय सप्ताह, मास या 43 दिन लगातार करने होते हैं, इन उपायों को बाद में शुरू करें। ध्यान रखें कि ऐसे उपाय बीच में न टूटें, अन्यथा शुभ फल प्राप्त नहीं होंगे।

5– यदि लंबे उपाय करते समय किसी कारण से उपाय बीच में बंद करना पड़े तो उस दिन उपाय करने के बाद थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांधकर अपने पास रख लें और जब दुबारा उपाय शुरू करना हो तो वह चावल धर्म स्थान में दे दें या बहते पानी में प्रवाहित कर दें। उसके बाद उपाय शुरूकर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल प्राप्त होगा।

6– मासिक धर्म के दौरान महिलायें मंदिर जाने वाले उपाय न करें, इस दौरान अपने खून से संबंधित परिवार के किसी सदस्य से उपाय करवायें।

7– एक दिन वाले उपाय चौथ, नवमी एवं चतुर्दशी को कर सकते हैं, लेकिन लंबे चलने वाले उपाय इन तिथियों को शुरू न करें।

8– जल प्रवाह की कोई भी वस्तु सिर पर सात बार घुमाकर जल प्रवाह करें।

9– यदि कोई उपाय जिंदगी भर के लिए करना है तो पहले उसे शुरू कर साथ––साथ एक––एक करकेदूसरे उपाय करें।

10– जिस उपाय को किसी खास दिन शुरू करने के लिए न कहा गया हो, उस उपाय को करने के लिए किसी दिन या तिथि जैसे अमावस्या, पूर्णिया आदि का विचार न करें।

11– जिस चीज/औजार से उपाय करें या जो भी सामान उपाय के लिए ले जायें, उसे वहीं छोड़ दें। लंबेचलने वाले उपाय में औजार आखिरी दिन छोड़ें।

12– जो चीज जल प्रवाह करें या धर्म स्थान में दें, उस दिन उस चीज का सेवन न करें।

13– उपाय के दिनों में शारीरिक संबंध स्थापित न करें।

आपकी कुण्डली से संबंधित सावधानियां और नियम

(1) आपकी कुण्डली में बुध तीसरे, आठवें, नौवें या बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने घर में चौड़े पत्तों वाले पौधे जैसे मनी प्लांट इत्यादि नहीं लगाना चाहिए, अन्यथा आपके स्वास्थ्य पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा।

(2) आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में बैठा हुआ है। यदि आपके घर की दहलीज पर खुदी हुई भट्ठी (जो कि शादी विवाह के अवसरों पर बनाई जाती है और बाद में ढक दी जाती है) है, तो यह आपकेपरिवार के लिए बहुत ही अशुभ है। आपको चाहिए कि उस भट्ठी की जली हुई मिट्टी को नदी या नाले में बहा दें, और ऐसी भट्ठी अपनी दहलीज पर फिर ना खोदें।

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

बुध की नाली/स्वभाव, शनि स्वभाव (के. पी. कस्प)

लग्न कुण्डली

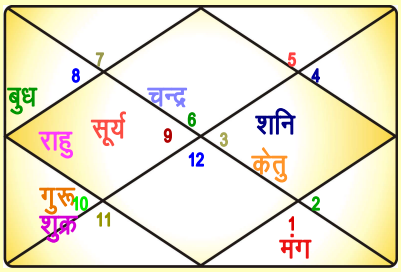

चन्द्र कुण्डली

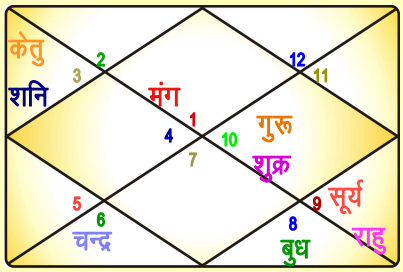

के. पी. कस्प कुण्डली

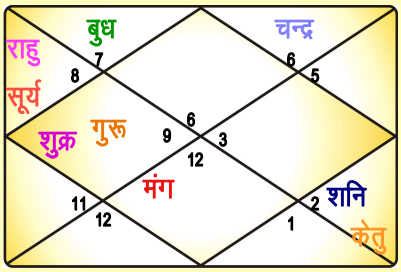

बुध की नाली

कुण्डली में बुध अपना प्रभाव शुक्र में मिला रहा है।

कुण्डली में बुध का स्वभाव

ग्रह	भावस्थ	गुणक	प्राप्तांक
सूर्य	3	9	27
चन्द्रमा	12	8	96
मंगल	7	5	35
बुध	2	4	8
गुरू	4	6	24
शुक्र	4	7	28
शनि	9	3	27
राहु	3	2	6
केतु	9	1	9
		योग –	260

बुध का स्वभाव/प्रभाव पता लगाने के लिए सारे ग्रहों का योग करने पर 260 प्राप्त हुआ, और उस योग को 9 से भाग करने पर 8 शेष प्राप्त हुआ।

पर्यवेक्षण – 8/9 (चन्द्रमा)

कुण्डली में शनि का स्वभाव

कुण्डली में शनि खराब स्वभाव का है।